

શ્રીમહેવ સરથી મહારાજા



૧૫ ૩

અંક ૧૦-૧૧

ક્રમાંક ૩૪-૩૫

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
 SHREE MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
 Koba, Gandhinagar - 382 007,
 Ph. : (079) 23276252, 23276204-05;
 Fax : (079) 23276249

તંત્રી, ચીમનલાલ ગોઠળદાસ રાણી

श्री जैन सत्य प्रकाश

(मासिक पत्र)

वि-४-४-८-१०-१०-१०



| | | | |
|-------------------------------|---|-------------------------------|-------|
| १ श्री सिद्धस्तोत्रम् | : | आ. म. श्री. विजयपद्मसूरिजी | : ३५७ |
| २ सभीक्षाब्रमाविष्करण | : | आ. म. श्री विजयलालण्यसूरिजी | : ३५८ |
| ३ 'जैनवंधु' ना लेखकने— | : | " | : ३५९ |
| ४ हुखंभ पंचक | : | आ. म. निजयपद्मसूरिजी | : ३६० |
| ५ अतियारनी आह गाथाओ | : | प्रा. दीनलाल : सङ्कहस कापडिया | : ३७२ |
| ६ श्री बादिदेवसूरि | : | श्री. नथमल्लजी विनोलिया | : ३७५ |
| ७ श्री शांतिनाथ स्तुत्यष्टकम् | : | मु. म. भद्रंकरविजयजो | : ३८३ |
| ८ जनधर्मां खो सभाजनु स्थान | : | मु. म. दर्शननिधशु | : ३८४ |
| ९ तीथग्रथाना संभवी कंधक | : | श्री. भोलगांव दीपयः चोऽसी | : ३८५ |
| १० धनभाजनु अ दर्श ग्रन्त | : | मु. म. मुशालविजय | : ३८६ |
| बाजे निशेषांक | | | |

समाचार

स्थानिक ग्राहकोने

स्थानिक—अभद्रावादना के शाहक भाऊओंतुं लवाजम हजु सुधी
वयुल थवुं आद्दी छे ते भाउओंने चिनंती छे के अभावो भाग्यस न्यारे
लवाजम लेवा आवे त्यारे लवाजम आपी आभावी करयो !

लगाजम

स्थानिक १-८-०

ग्राहकग्राम २-०-०

दूरदृश अंक ०-३-०

सरनामुं अहलायाना समाचार हरेक अंग्रेज भडिनानी
तेरभी तारीख पहेजां लभी जथाववा.

+८६ : चांद्रशंकर हमारांकर गुरुद्व, प्र० १० : श्रीभगवान् गोकर्णासु शाह सुदृशस्थान :
युग्मधर्म सुदृशाक्षय सलाहोस कोस हौड अभद्रावाद, प्रदारानस्थान : श्री जनधर्म
सत्यप्रकाशक समिति कार्यालय, लेशिंगबर्डनी चाठ धीकांटा, अभद्रावाद.

णमो त्थु णं भंगवओ महावीरसंस

सिरि रायनयरमज्जे, संमीलिय सव्वसाहुसंमहयं ।
पत्तं मासियमेयं, भव्वाणं मग्गयं विसयं ॥ १ ॥

श्री जैन सत्य प्रकाश

पुस्तक ३

: कंभांड ३४-३५ :

अंड १०-११

विक्रम संवत् १६६४ :
वैशाख-ज्येष्ठ वदी २वार संवत् २४३४
भुधवार: सन १६३८
मे-जुन १५

॥ श्री सिद्धस्तोत्रम् ॥

कर्ता—आचार्यमहाराज श्रीमद् विजयपालसूरजी
॥ आर्यवृत्तम् ॥

थुणिय परमगुणनिलयं, जेमिपहुं पुण्णभावसंपुण्णं ॥
णिमलसिद्धत्थवणं, करेमि सिरिसिद्धचक्रगयं ॥ १ ॥
सहजाणंदचउकं, थिरथासंजममखेयमावभरं ॥
पणदसपयारपत्तं, सणायणं सिद्धमभिवंदे ॥ २ ॥
णामाइयभेषणं, सिद्धा चउहाऽणुओगवाएणं ॥
सिद्धति जाण णामं, ते सिद्धा हुंति नामेण ॥ ३ ॥
सिद्धाणं पडिमाओ, ठवणासिद्धा सुयां सुणेयव्वा ॥
लद्धा न जाण सिद्धी, जुग्गा ते दव्वसिद्धा य ॥ ४ ॥
बद्वृत्तरिहंतते, अंतिमगुणठाणदुचरिमसमयमिम ॥
विसयरिपयडो पंते, तेरसपयडीड सेलेसी ॥ ५ ॥
णासियणिरुद्धजोगा, सिद्धा दव्वेण पावए मुर्ति ॥
भाविसरुवत्तेण, सिद्धा णो भूयभावेण ॥ ६ ॥
णियगुणरंगतरंगे, पणटुदेहाउकम्मजोणीओ ॥
संसाहियथिरसंती, सिद्धे भावेण वंदामि ॥ ७ ॥
सिद्धपयपणिहाणं, आगमनोआगमेहि णायव्वं ॥
उवओगबोहसहिओ, पटमो इयरो य तव्विभणो ॥ ८ ॥
रुवाईयदसाणं, णीसंगाणं सहावसिद्धीणं ॥
अणिसं भाणुगमणे, णमो णमो इय कहेयव्वं ॥ ९ ॥

विह्यदिणे सिद्धां, ज्ञानानलदुकम्मकद्वां ॥
 ज्ञां कुण्ठु भवा, भावा रत्तेण वणेण ॥ १० ॥
 सुङ्क्तिमभेषहि, तिजोगरोहं कमेण जे किच्चा ॥
 अफुसमाणगईप, सिद्धिगप ते सया वंदे ॥ ११ ॥
 पत्तनिहा अद्वगुणा, पहणेण तओ य कम्माइ ॥
 अद्विहाणसमाइ, तव्विरहगुणदुगविभूई ॥ १२ ॥
 अणित्थथागिइप, साहीणाणदिप निरावाहे ॥
 अपुणरावित्तिगप, सिद्धे वंदामि ते भावे ॥ १३ ॥
 अवगाहतिभागृणाऽवगाहणा जाण वाससिद्धसिला ॥
 एरंडाइनिदंसणा, लोगंतगप इगखणेण ॥ १४ ॥
 जं देवाइयसोक्खं, तत्तोऽणंतं सुहं परं जेसि ॥
 अववयपयपत्तां, साइअणंतेण ते वंदे ॥ १५ ॥
 कयलीथंभसमां, भवभोगसुहं विसेसपरतंतं ॥
 तह णच्चंतिय णें-तियं तहा णेव सिद्धां ॥ १६ ॥
 अणाइभोगकजं, खुहाणिविती तओ चला संती ॥
 जेसि सासयसंती, ते सिद्धे सव्वया वंदे ॥ १७ ॥
 णेयं पि सिद्धसम्म, केवलिणा भासिउं न उण सकं ॥
 उवमावइरेगेण, मिलेच्छपुरसोक्खदिद्वता ॥ १८ ॥
 णिगुणंतगुणद्वृ, टिप पप्पवप्पयास भावेण ॥
 पुण्णकयत्थभयंते, वंदे अकलोदप सिद्धे ॥ १९ ॥
 रुवारुवसहावे, णिव्वीप पारमतिथयाणंदे ॥
 उवसमियविहावगी, सिद्धे झाएमि हरिसेण ॥ २० ॥
 साहावियपुणतं, जच्चरयणसंनिहं सया जेसि ॥
 तहऽणंगविणासयरे, अणंगरुवेऽवि ते वंदे ॥ २१ ॥
 भोगी वि चत्तभोए, सवणणिडवण चंगभावे य ॥
 भेयवियोगयसरणे, सत्तियरंगेण ते वंदे ॥ २२ ॥
 अणाइणं गहण, सिद्धां णेव कम्मविरहाओ ॥
 किं लोहचुबविरहे, लोहागरिसो कया होज्जा ॥ २३ ॥
 केवलणाणुवओगी, परमिद्वे इक्तीसमुरक्खगुणे ॥
 चिय कम्माइ धमंते-निरुत्तसिद्धे सरेमि सया ॥ २४ ॥

(अपूर्ण)

समीक्षाभ्रमाविष्करण

[याने दिगंबर मतानुयायी अजितकुमार शास्त्रीष “श्वेताम्बर
मत समीक्षा ”मां आलेखेल प्रश्ननो प्रत्युत्तर]

लेखक—आचार्य महाराज श्रीमद् विजयलालवण्यसूरिजी
(गतांकथी चालु)
आशाम्बरीय आक्षेप

सूत्रकार भगवन्तना अने टीकाकार महाराजना आशयने नहि समजनार
आशाम्बर लेखके करेल आक्षेपः—

“अति प्रमादि और लोलुपी मुनि मद्य मांस मुनि अवस्थामें रहता
हुवा भी खा सकता है। यह सूलसूत्रकार और संस्कृत टीकाकारको
मान्य है। क्योंकि उन्होंने यहां कोई ऐसा स्पष्ट निषेध नहि किया कि
वह मद्य मांस भक्षण कर मुनि न रह सकेगा।”

आक्षेपनो सारांश

आ आक्षेपमां लेखक पम जणाववा मागे छे के अतिप्रमादी अने
लोलुपी मुनि मांस मदिरा वापरे तोपण मुनिपणामां वांधो आवतो नथी।
आवो सूत्रकार तथा टीकाकारनो मत छे, वारु कारश शुं ? मांस मदिरा
वापरे तो मुनिपणुं रही शकतुं नथी आवा चोकखा शब्दो आ स्थानमां
मुक्या नथी माटे ?

आक्षेपमां भरेली निविड अज्ञता

आ आक्षेप बुद्धिमार्गथी केटलो वेगछो छे प मूल अने टीकानां वचनो
जोनार सारी रीते समजी शके तेम छे। लेखके ध्यान राखवानी जहरत
हती के प्रस्तुत पाठनो आ विभाग शुं भक्ष्य ? शुं अभक्ष्य ? आने वापरनार
साधु ? या असाधु ? एम जणाववा माटे छे। जे पाठ जेने अंगे होय तेने
मुख्यताप ग्रतिपादन करे, आथी ‘मांस मदिरा वापरनारमां साधुपणुं टकी
शकतुं नथी’ एवा शब्दो प्रस्तुत विभागमां न मुकाय, तेने अंगे मानी लेबुं
के सूत्रकार अने टीकाकार तेनी पुष्टिमां छे, या तेनो आ मत छे, ते
खरेखर निविड अज्ञताने आभारी छे। जेम कोई सुझ पिता कदाचित्
दारुपीठामां दूतकीडानी सम्भावना जाणी पुनरने शिखामण आपे के ‘हे
वत्स, दारुपीठामां जुगदुं न खेलतो पथी आपणा कुलने कलंक लागे’
आमांथी कोई एवुं माखण काढे के दारुपीठामां दारु पीवो, अने अन्यत्र
जुगदुं रमबुं। एवो आनो मत छे, कारण के तेना निषेधके तेवा स्पष्ट शब्दो

अहीं मुक्या नथी । अहीं पण लेखके आना जेवी रमत खेली छे । अथवा स्वश्म दृष्टिथी जो विचार करवामां आवे तो आ पाठना चरम भागमांथी आपणे मेळवी शकीए छीए के मध्य माखण ने मांस मदिरा अभक्ष्य छे अने तेने वापरनारमां साधुता न होय ।

प्रस्तुत पाठना अन्तिम भाग पाडेल प्रकाश

आ पाठना छेल्ला विभागमां पर्म जणाववामां आव्युं हतुं के, अन्य मुनिओनी साथे ज गोचरी जाय, अने 'एसिय' तथा 'वेसिय' आहार लावीने वापरे, आ रीते वर्तनारनुं शुद्ध साधुपण्यु छे, आमां जे 'एसिय' अने 'वेसिय' शब्द मुकवामां आवे छे तेमां आचारनी झवेरात भरी छे । एसिय-पषण समितिथी शुद्ध अर्थात् वेंतालीस दोषरहित आहार । वेसिय-मुनिवेषमात्रथी मेळवेल किन्तु पूर्व परिच्यादिकने लईने नहि, अर्थात्—"धाइदूहनिमित्त०" इत्यादि दोषथीरहित आहार । मायानी विचार श्रेणिमां मध्य माखण ने मांस मदिरानां जे नामी आव्यां हतां तेनो निषेध 'एसिय' शब्द मुकी करेल छे. अने परिचित कुलोनां नाम आप्यां हतां तेनो निषेध 'वेसिय' शब्द मुकी करवामां आवेल छे ।

प्रसगोपात्त "एसिय" "वेसिय" शब्दनी चर्चा

जो के 'एसिय' शब्दना अर्थमां 'वेसिय' शब्दनो अर्थ अन्तर्गत थाय छे, कारण के "धाइदूह०" इत्यादि दोषोनो ४२ दोषमां समवतार छे. छतां पण 'वेसिय' शब्द जे अलग मुकवामां आवेल छे, तेनुं प्रयोजन प छे के मायानी विचार श्रेणिमां पूर्व परिचित अने पश्चात् परिचित कुलोनो जे उल्लेख कर्या हतो तेनो स्पष्ट शब्दमां निषेध करवो । आ 'वेसिय' शब्द एम जणावे छे के वेषमात्रथी आहार लेवो पण पूर्वा-परना परिच्यादिने आगळ धरीने नहि, अत एव टीकाकार महाराजे वेषमात्रथी लेवाता आहारना बाधक जे दोषो तेना अभावरूपे 'वेसिय' शब्दनो अर्थ जणावेल छे । जुओ "वेसिय" वैषिक केवलवेषावासं धात्री-दृतिनिमित्तादिपिण्डदोषरहितम् ।" एसिय पटले पषणाशुद्ध, आ पषणा शुद्ध ग्रकारनी छे:—गवेषणा, ग्रहणैषणा अने ग्रासैषणा, ग्रहणप्रसंगमां 'एसिय' शब्द मुकेल होवाथी ग्रहणैषणा लेवानी छे, ग्रहणैषणा पटले ४२ दोष रहित आहार लेवो । आ रीते विचारतां 'एसिय' शब्दनो अर्थ ४२ दोष रहित आहार थाय छे । 'वेसिय' शब्दे केटलाएक दोषना अभावने बतावेल होवाथी अवश्यिष्ट दोषाभावना संग्रह माटे टीकाकार महाराज एसियनो अर्थ उद्भवादिदोषरहित करे छे, जुओ-'एसिय' पषणीयमुद्धमादिवेषरहितम् ।

प्रस्तुतनुं अनुसंधान

हवे आपणे प्रस्तुत विषय पर आवीष। ते ए छे के मध्य माखण ने मांस मदिरा अभक्ष्य छे. तेने वापरनारमां साधुता टकी शकती नथी प वात प्रस्तुत पाठना अन्त भागमांथी कई रीते निकली शके छे? आना जवाबमां जणाववानुं जे आ पाठना अन्तिम भागे सूचव्युं हतुं के बेंतालीस दोषरहित जे आहार ते मुनिने वापरवा लायक छे-भक्ष्य छे. अर्थात् ते सिवायनो अभक्ष्य छे। बेंतालीश दोषरहित आहार वापरनारमां शुद्ध साधुता छे, अर्थात् ते सिवायनो आहार वापरनारमां ते नथी। मध्य माखण ने मांस मदिरा बेंतालीश दोषरहित आहार नथी कारण के तेमां ब्रक्षित निक्षिप्त अने अपरिणत दोषो रहेला छे. ब्रक्षित दोष एम जणावे छे के अचित्य या संचित्य एवा निन्दनीय जे मध्य वगेरे पदार्थ तेने अडकेली वस्तु लेवामां ब्रक्षित दोष लागे छे। ज्यारे निन्दनीय वस्तुना संसर्गमां आवेल वस्तु लेवामां आ दोष लागे छे, त्यारे खुद निन्दनीय अने निन्दनीय सजातिना संसर्गवाळां जे मांस मदिरादि तेने लेवामां तौ सुतरां लागु पडे। निक्षिप्त दोष एम जणावे छे के सचित्य वस्तुनी मध्यमां रहेल अचित्य वस्तुने पण लेवामां निक्षिप्त दोष लागे छे। ज्यारे सचित्य वस्तुना मध्यमां पटेल आहार लेवामां आ दोष लागु पडे छे, त्यारे खुद सचित्य अने सजातीय सचित्य अंशोना मध्यमां रहेल मांस मदिरामां तो सुतरां लागु पडे। अपरिणत दोष एम जणावे छे के जीवसंसक्तिवाळी वस्तु लेवामां अपरिणत दोष लागे छे. मांस मदिरा ने मध्य माखण जीवसंसक्तिवाळां होवाथी तेमां आ दोष लागे एतो स्पष्ट ज छे। आ रीते मध्य माखण ने मांस मदिरा दोषत्रययुक्त होवाथी बेंतालीश दोषरहित आहारनी गण-वीरीमां आवी शके नहि अत एव मुनिओने ते अभक्ष्य छे एम सिद्ध थाय छे। तथा आ चार वस्तु बेंतालीश दोषरहित नहि होवाथी तेने वापरनारमां शुद्ध साधुता न डोही शके ए पण सिद्ध थाय छे। आ चार वस्तु निन्दनीय अने जीवसंसक्तिवाळी छे ए वात जैनत्वनो दावो धरावनारने विदित पण छे, अने प्रसंगे अमो पण बतावीशुं।

आचाराङ्ग सूत्रना विमल पाठने, सूत्रकार भगवन्तने तथा टीकाकार महाराजने अलीक स्वरूपमां चीतरी भद्रिक जीवोने ब्रमजाळमां फसाववा केवो प्रयास लेवायो छे? शासनदेव तेने सद्बुद्धि समर्पे। द्वितीय पाठनी मीमांसाने उपसंहरी सृतीय पाठनी भूमिकामां हवे पछी प्रवेश करीशुं।

(अपूर्ण-)



“ जैनबन्धु ” ना लेखकने-

लेखक—आचार्य महाराज श्रीमद् विजयलालवण्यस्त्रिजी

एक महाशय तरफथी “ जैनबन्धु ” नामना दिग्भवर मासिकनो तृतीय वर्षीय ७-८ अंक अमने जोवा माटे मोकलालववामां आव्यो । आ अंकना प्रकाशक तथा मुद्रक तरीके अजितकुमारजीनुं नाम प्रांते जणावेल छे । रखेने आ ते ज अजितकुमारजी न होय, के जेणे “ श्वेताम्बरमत समीक्षा ” मां सत्यथी वेगळी अनेक भ्रमणात्मक घटनाओ रीतरी छे, जेने प्रकाशमां लालववा ‘ श्री जैन सत्य प्रकाश ’ मां अमारे ‘ समीक्षाभ्रमाविष्करण ’ शीर्षिक लेखमाला शरू करवी पडी छे. अस्तु !

“जैनबन्धु”ना ते अंकना ३५मा पाने ‘ अपवाद दशामें मांस ग्रहणकी पुष्टि ’ ए शीर्षिक एक लेख फूलचंद जैनना नामथी प्रसिद्ध थयेल छे । आ लेखके करेल आक्षेपोनुं निर्मलन आ मासिकमां सविस्तर प्रमाण पुरस्सरं थई चुक्यु छे, छतां ते तरफ आंखमींचामणा करी ‘ मुखमस्तीति वक्तव्यम् ’ ए न्यायने अनुसारे युक्तिवादने चोक्खो कर्या सिवाय ज पिष्टपेषण करेल छे. अस्तु !

श्रुतकेवली चतुर्दशिवित भगवान् भद्रबाहुस्वामी प्रणीत परम पावन जे कल्पसूत्र तेनो सनातन वारसो श्वेताम्बरीने मझेल छे । आ वारसामां दिग्भवरो भाग मागी शके तेम नथी, कारण के दिग्भवर मान्यताने खोटी पाडनारी अनेक मान्यताओ आमां आवे छे । आ कल्पसूत्र भद्रबाहुस्वामी महाराजे बनावेल छे एम जो दिग्भवरो मानी ले तो कल्पसूत्रना वचनथी विपरीत बोली या मानी शकाय नहि, त्यारे करबुं शुं ? आ धुंचवणनो उकेल करवा कतिपय दिग्भवर लेखको ए विचार पर आव्या ले आ कल्पसूत्रना प्रणेता भद्रबाहुस्वामी छे ज नहि । प्रस्तुत लेखके पण शरूआतमां आ ज वातने पकडी छे, जुओ शरूआतनो विभागः—

“ श्वेताम्बर समाजमें कल्पसूत्र बहुत माननीय ग्रन्थ है । श्वेताम्बरी भाई इसके रचयिता श्रुतकेवली भद्रबाहु को कहते हैं, किन्तु वास्तवमें यह ग्रन्थ उनका लिखा हुआ है नहि, क्योंकि कल्पसूत्रमें उसका रचनाकाल बीर सं. ९८० लिखा है । जबकि भद्रबाहुस्वामी बीर सं. १६२ में हुये हैं । ”

उपर्युक्त लखाणमां लेखक एम जणाववा मागे छे के कल्पसूत्रमां एवं लखेल छे के आ ग्रन्थनी रचना बीर सं. ९८० मां थयेल छे. बीजी बाजु नजर करीए तो भद्रबाहु स्वामि महाराजनो काल बीर सं. १६२ नो छे माटे कल्पसूत्रना रचयिता श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामी होई शके नहि । आ हकीकत असीम जुठाणाथी भरेली छे । कल्पसूत्रमां कल्पसूत्रनी रचनानो काल बतावेल ज नथी. कैवल कल्पसूत्रने पुस्तक पर लखवानो काल जणाववामां आवेल छे, जुओः—

अंक १०-११]

“जैतर्थन्धुना” लेखके-

[३५३]

अथ भगवतो निर्वाणकालस्य पुस्तकादिलिखनादिकालस्य च अन्तरमाह—
समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सर्वदुखप्रहीणस्स नव वाससयाइ
विक्रिताइ दसमस्स य वाससयस्स अयं असीइमे संवच्छरे काले गच्छइ।

[श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य यावत् सर्वदुःखप्रहीणस्य नव वर्ष-
शतानि व्यतिक्रान्तानि दशमस्य च वर्षशतस्य अयमशीतितमः संवत्सरः
कालो गच्छति]

अत्र व्याख्यालेशः—कल्पसूत्रस्य पुस्तकलिखनकालज्ञापनाय इदं स्वत्रं
देवद्विगणिक्षमाश्रमणैर्लिखितम्, श्री वीरनिर्वाणादशीत्यधिकनवर्षशतातिक्रमे
पुस्तकारुदः सिद्धान्तो जातस्तदा कल्पोऽपि पुस्तकारुदो जात इति । तथा
चोक्तम्—

वल्लहिपुरंमि नयरे देवडिपमुहसयलसंघेहिं ।

पुत्थे आगमलिहिओ नवसयअसीआओ वीराओ ॥ १ ॥

[वल्लभीपुरे नगरे देवद्विप्रमुखसकलसंघे : ।

पुस्तके आगमो लिखितो नवशताशीतौ वीरात् ॥ १ ॥)

भावार्थ—कालनी परिहाणिने लईने, विना पुस्तक ग्रन्थो खसबा लाभ्या
त्यारे वल्लभीपुर (वल्ला) मां महावीरनिर्वाणीथी १८० में वर्षे देवद्विगणिक्षमा-
श्रमण प्रमुखसकलसंघे मल्लीने कंठस्थ आगम रहेता हता तेने पुस्तकमां लख्या ।

कदाच लिखितनो अर्थ रचित करवामां आवतो होय तो लेखकने
आ गम्भीर भूल सुधारवा वैयाकरण अने व्यवहारज्ञ पुरुषनो परिचय
करथानी जरूर छे । दिगम्बरीय जैनेन्द्र व्याकरणनी शब्दार्णवचनिका
नामनी लघुवृत्तिनी प्रतिने प्रान्ते लखेल छे के—

“ संवत् १७१३ वर्षे कार्तिक सुदि अष्टमी बुधे वाग्वरदेशो..... श्रीक-
ल्याणकीर्तिस्तच्छिष्यब्रह्मतेजःपालेन जैनेन्द्रमहाव्याकरणं सवृत्तिकं लिखितं
शोधितं च ॥

आमां पण ‘लिखित’ शब्द छे, हवे लिखितनो अर्थ तो रचित
करवामां आवे तो तेनो संवत् १७१३ नो जणावेल छे अने दिगम्बर
मान्यता ए छे के आ वृत्तिना रचिता सोमदेव छे जेओए शक संवत्
११२७ मां रचेल छे । आ वावतनो पण सुंचवाडो लेखकने छोडे तेम नथी ।

आगल चालतां लेखक लखे छे के:—

“ कल्पसूत्रमें पृ. १७७ पर लिखा है कि:— ‘ यद्यहि मधुमद्यमांसवर्जनं
यावज्जीवमस्त्येव तथापि अत्यन्तापवाददशायां ब्राह्मपरिभोगार्थं कदाचित्
ग्रहणेऽपि चतुर्मास्यां सर्वथा निषेधः । ’ ”

आ पाठ कल्पसूत्रनो छे एम समजाववा लेखके आडम्बर करेल छे,
परंतु आ पाठ कल्पसूत्रनो छे ज नहि, किन्तु कल्पसूत्र परनी अनेक टीका
पैकीनी सुबोधिका नामनी टीकानो छे । टीकाकार महर्षिए ‘ कदाचित् ’ अने
‘ अपि ’ शब्द मुकीने ध्वनित करेल छे के उत्सर्ग विनानो अपवाद अने

अपवाद विनानो उत्सर्ग होई शकतो नथी ए नियमानुसार बाह्य परिभोगने अर्थं कदाचित् ग्रहण करातुं होय तो पण चोमासामां तो तेनौ सर्वथा निषेध ज समजबो । आ बावतनुं सविस्तर विवेचन प्रमाण पुरस्सर अमो प्रथम करी आव्या छीए, त्यांथी वाचकवर्गं जोई लेवुं.

आगल चालतां लेखक अमने उद्देशीने जणावे छे के :— विजय-लावण्यस्मृतिए कल्पसूत्रना विधानने पुष्ट करवानुं ज ध्येय राखेल छे अने आ ध्येयनी पूर्ति माटे भावप्रकाश आदि ग्रन्थोनां प्रमाणो पण आव्यां छे । आना उत्तरमां जणाववानुं जे परम पावन कल्पसूत्र स्वतः प्रमाणपुष्ट ज छे. फक्त अजितकुमारजीए खेटी भग्रणा उत्पन्न करी हती तेने माटे अमारे अनेक प्रकारे व्याख्यान बतावबुं पडच्यु हर्तुं. टीकाकार महाराजना एक प्रकारना व्याख्यान पर अजितकुमारजीए आक्षेप करता जणावेल हर्तुं के मांस बाह्य उपयोगमां आवतुं ज नथी. आ बात भूल भरेली छे ते जणाववा पुरता भावप्रकाशदिना पाठो आपवा पडच्या हता । आ बंयु अजितकुमारजीने आभारी छे ।

आगल चालतां लेखक जणावे छे के “जोवहिंसा जिस कार्यमें होती है, जैन साधु उस कार्यको नहि कर सकता । यदि जानते बुझते भी वह जीवहिंसा करता है तो वह जैन साधु नहि कहला सकता ।”

आना प्रत्युत्तरमां जणाववानुं जे आ बातमां कोईनो मतभेद होई शके नहि, परन्तु अपवाद दशामां विशेष लाभनी परिस्थितिए उपर्युक्त वातने विश्वान्ती आपवी पडे छे । एकान्त ज जो मानी लेवामां आवे तो चोमासामां भूमि जीवाकूल होवाथी विहारमां हिंसा थाय छे एम जाणनार तमारा दिगम्बर साधुने ‘अपवाद दशाये कारणे चोमासामां विहार अवश्य करवो’ एवा दिगम्बर शास्त्रीय वचनने आधारे विहार करवामां शाधुता रहेशो के केम ते लेखकने विधारबुं पडशे ।

आगल चालतां लेखक ‘अपवाद’ मार्गने बाना तरिके प्रतिपादन करे छे, परंतु लेखकने उन्नसर्ग अपवादनी गुण्ठणी कोई सद्गुरु पासे शीख-बानी आवश्यकता छे । दिगम्बरदर्शने अनेक स्थले अपवाद बताव्या छे, तेटलुं ज नहि परंतु अपवाद सिवायनो उत्सर्ग होई शकतो ज नथी. अपवाद सिवायनो उत्सर्ग माननार स्याद्वाद दर्शन पर कुठाराघात करे छे, त्यां सुधी लखी गया छे. अने आमां मांसना अपवादनो पण समावेश थई शके छे ।

मांस शब्दनो सर्थ पुर्वाल या वनस्पति विशेष थाय छे. आ चर्चावाळो पाठ हजु अमारी तरफथी बहार चर्चामां आवेल नथी, छतां ते चर्चामां कल्पसूत्रना पाठनी चर्चाने नाखो जैनध्वजना लेखक चरनदासजी तथा अमोने परस्पर अफलाववानी भेदी रमत खेली पोते खसी जवानी चालाकी खेली छे. परंतु आ तेमनौ दुर्वताने ज प्रगट करे छे.

अंक १०-११]

“जैनधन्य” ना लेखने

[३५]

आगल चालतां लेखक जणावे छे के:- “अजितकुमारजीने श्वेताम्बरमत समीक्षा’में जो कुछ लिखा है वह गलत नहि है।”

आना जवाबमां जणाववानुं जे अजितकुमारजीए श्वेताम्बर मत समीक्षामां गप्पा मारवामां कचाश राखी नथी, जेनुं सविस्तर प्रदर्श ‘समीक्षाभ्रमाविकरण’ मां अमो करावी आव्या छीए. जरुर हशो तो प्रसंगे अनुक्रमणिका पण मळी रहेशो तथा आ लेखकना वचनो पण साबीत करी आपे छे, कई रीते ? जुओः—

अजितकुमारजी श्वेताम्बर मत समीक्षामां जणावे छे के मांस दवा तरीके बाब्य उपयोगमां आवी शकतुं ज नथी त्यारे आ प्रस्तुत लेखना लेखक कबुल करे छे के मांस दवा तरीके बाब्य उपयोगमां आवे छे. वगेरे.

आगल चालतां अमारी लेखमाळाने रोकवा डरामणी आपता लेखक जणावे छे के—

सम्भव है ‘जैन सत्य प्रकाश’ द्वारा इसी प्रकार अन्य भी अनुचित विधानोंका समर्थन किया जावेगा और तब ‘श्वेताम्बर मत समीक्षा’ का लिखना स्वतः सत्य-प्रमाणित हो जायगा।”

आना जवाबमां जणाववानुं जे सत्यप्रकाशमां उचितविधाननुं ज समर्थन थाय छे. कदाच तमारो अनुचिततानुं विधान न होवाथी अनुचित लागतुं होय तो तेनुं कोई औषध नथी। उचितता के अनुचितता वचनमात्रथी रई जती नथी, किन्तु प्रमाण अने युक्तिवादथी थाय छे। एक पण प्रमाण या युक्तिने खण्डित कर्या सिवाय वाक्यरताथी कोई कार्य सरवानुं नथी।

हाल आ लेखने उपसंहारतां अमो एटलुं जणावीए छीए के अमारा श्वेताम्बर दर्शनमां मांसादि निन्य पदार्थनो उपयोग नथी, एटलुं ज नहि परंतु तेने घिक्कारी काढेल छे। आ अमारो राजमार्ग छे। कचित तेनुं वर्णन आवे छे ते केवल उत्सर्ग अपवादनी विशाळ गुण्ठणीने आधारे छे। आ उत्सर्ग अपवादनी गुण्ठणीने दिग्म्बर दर्शने पण पोंखणा दई दई स्वीकारी छे। इतिशम् ।

निवेदन

डेटलाक अगत्यना डारणे ‘श्री जैन सत्य प्रकाश’ नो मे भिन्नानो अंक नियम मुज्जभ अडार नथी पडी शक्यो अने तेथी भे-जुननो अंक साथे अडार पाडवो पड्यो छे, ते माटे अमे अमारा वाच-डानी क्षमा भाणीच्ये श्रीच्ये.

—व्यवस्था ५५

હુર્લભ પંચક

[શ્રી. શત્રુંજ્ય તીર્થ, શિવપુર-મોક્ષ શેતુંણ નહીં, શાંતિનાથજિન અને શભિદાન-મુનિદાનનું વિવરણ]

લેખક—આચાર્ય મહારાજ શ્રીમદ્ વિજયપદસૂરિજી

શત્રુંજ્ય : શિવપુરં, નદી શત્રુંજ્યામિધા ॥

શ્રીજ્ઞાંતિ : શમિનાં દાન, શકારા : પણ હુર્લભા : ॥ ૧ ॥

પરમતારં પૂજય શ્રી. તીર્થેંકર હેવેએ આરંભ સમારંભમય વિવિધ પ્રવૃત્તિઓથી ભરેલા પ્રવૃત્તિમય જીવન કરતાં નિરુત્તિમય જીવનને મુક્તિપદ મેળગવનાં અનેક સાધનોમાં ઉત્તમ સાધન તરીકે ફરમાયનું છે. એ તો અનુભવ સિદ્ધ છે કે પ્રવૃત્તિનાં બોભાહિ સાધનોને હુર કરીએ અને પરમ પ્રભાવશાલી શ્રી. તીર્થસેવાહિ ઉત્તમ સાધનો સેવીએ તો જ નિરુત્તિમય જીવન પામી શકાય. આવા અનેક સુદૂરાને ધ્યાનમાં રાખી પૂર્વાચાર્ય ભગવનોએ નેમ દ્વારા દૃષ્ટાંતે મનુષ્ય ભરતની અને તેમાં પણ-અનુકૂળે ધર્મશ્રવણ, અક્ષા, સંયમ, અને તેના સાધનમાં આત્મિક વાર્ય ફ્રાયવું—ચા ચારતી હુર્લભના જણાવી છે, તેવી જ રોતે પાંચ શકાર (જે પદ્ધર્થવાચક શઘનના શરૂઆતમાં ‘શ’ આવે તેથી પાંચ પદ્ધર્થો)ની હુર્લભતા જણાવી છે. સમજવાનું એમ છે કે—મહાભાગ્યોદ્યે કાયમની નિરુત્તિને આપનાર આ પાંચ મળી શકે છે. તે પાંચ અને તેમનું સ્વરૂપ આ પ્રમાણે સમજવું:—

૧ શત્રુંજ્ય, ૨ શિવપુર-મોક્ષ, ૩ શત્રુંજ્યા નહીં, ૪ શાંતિનાથ પ્રભુનું પૂજન અને
૫ શભિદાન-મુનિદાનને દાન.

૧-શત્રુંજ્ય તીર્થ—જે દ્વારા સંસારસમુદ્ર તરો શકાય તે તીર્થ કહેવાય. તેના ચાર બેદ આ પ્રમાણે સમજવાઃ—

(૧) નામ તીર્થ—કોઈનું તીર્થ એવું નામ પાડીએ તે પુરુષ, નામ નિક્ષેપની અપેક્ષા (નામનું) તીર્થ કહેવાય.

(૨) સ્થાપના તીર્થ—તીર્થનો નકશો, નેમ શ્રી. શત્રુંજ્યાહિ તીર્થનો પણ છણી વગેરે.

(૩) દ્વારા તીર્થ—બીજાનો (અન્ય ધાર્મિક) જેને તીર્થ તરફે સ્ત્રીકારે છે, એવા લોકીક તીર્થે, કે નેચો, બાલ મધ્યને હુર કરે પણ આંતર મેલ (કર્મથી થયેલી જીવની મહિનતા)ને હુર કરી શકે નહિ.

(૪) ભાવ તીર્થ—સક્રિય કર્મભલને હુર કરી ડેઠ મુક્તિ સુધીના પણ લાભ આપવાનો સમર્થ હોય એવા અનંત તીર્થેંકર ગણુધર સમલંકૃત શ્રી. શત્રુંજ્ય વગેરે પવિત્ર તીર્થ, કુલ્યાણકુલ્યિ વગેરે પવિત્ર સ્થળો.

શુદ્ધકેવલિ ભદ્રાણું સ્વામી તથા પૂજય શ્રી. જિનભદ્રગણ્ય ક્ષમાશ્રમણું મહારાજે

આંક ૧૦-૧૧]

હુલાંગ પંચક

[૩૧૭]

આ ભાગત સ્પષ્ટ કહું છે કે કર્મિનાં ક્ષય, ઉપશમ, ક્ષોપશમ જેમ દ્વય, કાલ, ભવ, ભાવ, નિમિત્ત થાય છે, તેમ ઉત્તમ ક્ષેત્રના નિમિત્ત પણ થઈ શકે છે. વળી એ પણ જગતાંદર છે કે શારીરિક સધારણાને માટે જેમ હવાખાના વગેરે સાધન છે તેમ માનસિક સુધારણાને માટે એથે મનને નિર્મિત બનાવવા માટે અને શાંતિમય જીવન ચુનારવા માટે શ્રી શતુંજયાહિ તીર્થભૂમિ આહિ પવિત્ર સ્થળો વિશિષ્ટ સાધન છે,

આમા અંગ તરફે પ્રસિદ્ધ એવા શ્રી અંતરૂદ્ધરાંગ સૂતમાં કહું છે કે—ધર્ષણે મુનિવરો વગેરે ‘જાવ સેતુંજે સિદ્ધા’ એથે સંયમાહિની સાધના કરી આ તીર્થ ભૂમિનાં સ્પર્શન, દર્શન, ધ્યાનાંથી સંકલ કર્મસમૂહ દર કરી મુક્તિપ્રદ પામ્યા. શૈલક રાજ્યિ, અને જેઓને બાલબહ્યારી શ્રીનેમિનાથ પ્રલુને વાદીને આહાર કરવાનો નિયમ હતો એવા પાંચ પાંડવોએ જ્યારે શ્રી રૈવતાયલના રસ્તામાં સાંભળ્યું કે શ્રી નેમિનાથ પ્રલુન નિર્વાણપ્રદ પામ્યા ત્યારે વીશ કેડ મુનિવરો અને કુંતીમાતાની સાથે તે યુધ્યાંદિર, લીમ, અંજુન, સહદેવ અને ગંગાલ એ તીર્થોદ્ધરક પાંચે પાંડવો, આ શ્રી શતુંજય ગિરિની ઉપર મહાલાલદારિ અણુશાણ સંદર્ભી, કૃપાક શ્રેણીમાં આરદ થઈ, ભારે વાતિ કર્મેને ખપાવી, કેવળી થઈને, ચોગ નિરોધ કરી શૈદેશી અવર્થામાં અધારિત કર્મપુંજને આળા સિદ્ધિપ્રદ પામ્યા, અમ શ્રી જાતાસુત્રાં કહું છે. ચૈત્રી પૂર્ણે કેડ મુનિવરોની સાથે શ્રી પુંડરીક ગણ્યુધરં તથા ત્રણ કેડ મુનિવરોની સાથે (મહાસતી સીતાળજીની પદ્ધી દીક્ષા ગણ્યુધ કરનાર) શ્રી. નામયંત્રલુ વગેરે ધર્ષણે ભવ્ય જીવો આ શતુંજય તીર્થમાં સિદ્ધિપ્રદ પામ્યા.

આ તીર્થનાં ૨૧ નામો આ પ્રમાણે અતિમુશ્ટ મુનિએ નારદ કર્પિની આગળ કલ્યાં છે:-
 ૧. સિદ્ધિક્ષેત્ર, ૨. તીર્થરાજ, ૩. ભર્તદેવ, ૪. ભગીરથ, ૫. વિમલાદિ, ૬. આહુભાસિ, ૭. સહ્સ્રકર્મશ, ૮. તાલઘન, ૯. કદમ્બ, ૧૦. શતપત્ર, ૧૧. નગાધિરાજ, ૧૨. અષ્ટોત્રશતકુર, ૧૩. સહ્સ્રપત્ર, ૧૪. દંક, ૧૫. લૌહિત્ય, ૧૬. કપર્દી નિવાસ, ૧૭. સિદ્ધિશોભર ૧૮. શતુંજય
 ૧૯. મુક્તિતનિલક્ષ્ય, ૨૦. સિદ્ધિપર્વત અને ૨૧. પુંડરીક.

આ શ્રી સિદ્ધિગિરિમાં પાંચ સળ્યવન ઝૂટો છે જ્યાં રસ્સરૂપિકા (ઝૂધં) રલની આણ, હિન્દુ ઔષધિ, કલ્પવૃક્ષ વગેરે હિન્દુ પદ્માર્થી રહેલા છે, તેનાં નામ આ પ્રમાણે જાણુવાં:-
 ૧. દંક, ૨. કદમ્બ, ૩. કાઢી (કપર્દી) નિવાસ, ૪. લૌહિત્ય અને ૫. તાલઘન.

આ શ્રી સિદ્ધિગિરિ અવસર્પણીના પહેલા આરામાં ૮૦ ચોજન પ્રમાણુ, શીજા આરામાં ૭૦ ચોજન પ્રમાણુ, નીજા આરામાં ૬૦ ચોજન પ્રમાણુ, ચોથા આરામાં ૫૦ ચોજન પ્રમાણુ હતો અને દાદ પાંચમા આરામાં ૧૨ ચોજન પ્રમાણુ છે. તે પણ વિસ્તારમાં ધટો ધટો છૂટા આરામાં ૭ દાથ પ્રમાણુ રહેશે.

શુગાદીશ પ્રલુન શ્રી આદિદેવના સમયમાં આ શ્રી સિદ્ધિગિરિનો વિસ્તાર મૂલના ભાગમાં ૫૦ ચોજન પ્રમાણુ અને ઉપરના ભાગમાં ફ્લી ચોજન પ્રમાણુ હતો. અને આ ગિરિરાજ ૮ ચોજન પ્રમાણુ ઉંચો હતો. આનતી ચોવીશીમાં

૧. અમતું ‘બીજુ’ નામ કર્પકસેન છે, તે શ્રી ભરતરાજના પહેલા પુત્ર અને શ્રી કર્પકસેના પહેલા ગણ્યુધર જાણુવા.

[३६८]

श्री जैन सत्य अकाश

[१५४३]

श्री शेषिकराज्ञ वगेरेना ज्ञवो पञ्चनाम आहि नामे तीर्थंकरो थरो, तेहो पण अहीं समवसरणे (पधारणे), तेमज वर्तभात चोवीशीना चोवीश तीर्थंकरो ऐकी श्री नेभिनाथ प्रलु जिवायना तेवीसे तीर्थंकरो अहीं पञ्चार्था हुता.

अहींया आ अवसर्पिणीमां श्री कङ्गभद्रेव प्रलुनी डेवली अवस्थामां, आरीसा लुवनमां अनित्य भावना भावी डेवली थनार. ‘जितो भवान् वर्धते भयं’ अम सुणी सावचेत रहेनार, चोराशी लाख पूतना आयुष्यवाला अने आहमे भवे मुक्तिपद पामनारा, श्री भरत यडवीर्ये अहीं ऐ योजन प्रमाण रलभय विशाल भंडिं अंधार्युं हुं. तेमां सोनानी तथा इपानी आवीश प्रतिमाओं हुती. भूल नायक तरीके रलभय श्री कङ्गभद्रेव भगवतनी प्रतिमा हुती. अने ते भंडिने इरती आवीश देवकुलिका (देवडीओ) हुती. पहेलां अहीं भीजां पण तेवां धण्णां दहेरां हुतां, जेओमां आवीश तीर्थंकर देवेनी देप्यभय प्रतिमाओं अने पाहुकाओं हुती. महाराज श्री भरतनी जेम अहीं श्री बाहुम-लिल्ले पण समवसरणुना देखाव मळित ‘श्री भद्रेवी प्रासाद’ नामनुं दहेरासर अंधार्युं हुं. तेम करवामां छेठेथी श्री भद्रेवी भाताजु हाथीनी अंबाडी उपर ऐहा ऐहा समव-सरणुनी नंदिं जेहने त्यां ज कध रीते उताम भावना भावी डेवली थध मुक्तिपद पाम्या? –आ हकीकत जखावनानो सुहो हुतो.

आतिक वीरोद्धवास वधारनार, परम प्रभावक आ तीर्थनी भूमिमां ऐ करोड मुनिव-रेनी साये विधापूर राजर्पि–श्री नभि अने विनभि मुनिराज तथा द्रविड अने उवारिजिलो (६३) मुनिवरो दृश करोड मुनिराजना परिवारथी परिवर्तीने सिद्धिपद पाम्या. श्री नारद मुनिराज अहीं ६१ लाख मुनिवरेनी साये अने साडी त्रण करोड मुनिवरेना परिवार साये श्री. शांख अने प्रद्युम्न मुनिराज वगेरे भव्य ज्ञवो अहीं सिद्धिपद पाम्या.

आ ज गिरिराजनी आराधना करीने श्री कङ्गभद्रेव प्रलुना, सूर्य पथाथी भांडीने सगर यडवर्ति सुधीना, धण्णाचे राजा वगेरे आंतरे आंतरे सर्वार्थसिद्धिमां जय, ए फेसि सिद्धिपद पाम्या हुता. तेमज शुक्रराज वगेरे असंप्याती डोडाकेडी प्रमाण भव्य ज्ञवो पणु आ ज तीर्थनी साधनाथी, परमपद पाम्या हुता. श्री. अजितनाथ अने श्री शांतिनाथ प्रलु–अहीं चोभासु रहा हुता. प्रलु श्री नेभिनाथना वयनथी श्री नंदिषेण नामना मुनोश्वर याना करवा अहीं आव्या हुता. तेमणे महाभयंकर रोगनी भीडा दूरनार श्री अजितनाथ नामनुं प्राकृत स्तोत्र अनाऱ्युं छे. अहीं श्री भरतमहाराजन्ये नाना तणावना रथते अने गुद्धाओमां पधावेली महाप्रभावशाली प्रतिमाओने नभरार करनारा भव्य ज्ञवो एकावतारी बने छे.

२-राज शेषिक प्रलु श्री महावीर डेवना परम भक्त हुता. क्षायिकसम्यक्त्व पाम्या पहेलां, गर्भिणी हुनिणीनो शिकार करवाथी राज शेषिके नकायुध्यनो अंध पाडयो; जेथी, हाल ते पहेली नरकमां छे. ८४ हुनार वर्षानु अवन पूर्वं करी ते तीर्थंकर थरो. विस्तार माटे श्री तीर्थंकर नाम कर्म आ लेण जेवा, जे आ मासिकमां छपायेआ छे.

३-रामायणमां कछु छे के-रावणु आ सुनि उपर द्रेष राखतो हुतो. “अष्टापदनी नीचे ऐसी खर्वत सिद्धित आ सुनिने समुद्रमां इंकु,” आ रामायणी रावणु नीचे गेया. सुनिने अभर पडतां यमतार भताय्या त्यारे राड पाडी तेथी तेतुं रावणु नाम प्रसिद्ध थयुं.

આ શ્રી શત્રુંભ્રય તીર્થનો, તીર્થાતુરાણથી શ્રી સંપ્રતિ, વિક્ઠમાદિલ્ય, સાતવાહન રાજ, વાગભટ મંત્રી, પાદલિપ્ત, આમરાજ વગેરે ધાર્યા પુષ્યશાલી જીવોએ ઉદ્ધાર ફર્હેં છે.

શકેને શ્રી ક્રાવિકાચાર્ય મહારાજની આગળ કહ્યું હતું કે-શ્રી મહાનિર્દેષ ક્ષેત્રમાં પણ સમૃદ્ધાણ્ય જીવો આ શ્રી શત્રુંભ્રયનું સમરણું કરે છે. તેમજ કલ્કિરાજનો પ્રપોત મેધયોપ નામનો રાજ ભવિષ્યમાં અહીં રહેલા શ્રી મહિદેવા પ્રાસાદનો અને શ્રી શાંતિનાથના પ્રાસાદનો ઉદ્ઘાર કરવશે, અને છેદ્યો ઉદ્ઘાર શ્રી. દુર્ગસહ સરિજુના દપદેશથી રાજ વિમલ વાહન કરવશે અને તીર્થના વિચ્છેદકલમાં પણ ભાવિ શ્રી પદ્મનાથ પ્રલુના તીર્થ સુધી દેવતાએ, આની પૂજા કરવે. આ તીર્થના પ્રમાણે પુષ્યશાલી એવાં નિર્યાચો પણ સદ્ગતિ પામ્ય છે. પામે છે અને પામશે. તેમજ ચિત્તની અદ્ધ્યાત્માથી આ તીર્થનું ધ્યાન કરવાથી સિંહ, અજિન, સમુદ્ર, સર્પ, વાધ, રાજ, ઓર, યુદ્ધ, ચોર, શત્રુ, મરકો આદિનો બય જરૂર નાશ પામે છે. વળી ખીજન સ્થળે કરેલ, ઉત્ત્ર તપ અને ઉત્ત્ર અલયર્થથી ને લાભ થાય, તે લાભ અહીં વિધિપૂર્વક ચોમાસું, નવાણું યાત્રા વગેરે નિમિત્તે રહેવાથી મલી શકે એવો આ તીર્થનો અદ્યાકિક પ્રભાવ છે. એક માચ્યસ કરોડો ઇપિયાના ખરચે ખીજન સ્થળે મધ્યનિત સુંદર આદારનું દ્વાન કરવાથી ને લાભ પામે તે લાભ અહીં વિધિપૂર્વક એક ઉપવાસ કરવાથી મેળવી શકે છે. આ શ્રી વિમલગિરિને દેખવાથી, ત્રણે લોકના તીર્થના દર્શનનો લાભ મલે છે. અને આ તીર્થભૂમિમાં લોજનશાલા દાનનશાલાહિની હુયાતી છતાં (તેવા ઉપરલ સિવાયના કાળામાં) કાગડાનો ઉપરલ પ્રકટ્યો નથી. અને સિદ્ધગિરિના યાત્રા કર્યા પહેલાં યાત્રાનુંનો લોજનદાન કરવાથી (ભાતું દેવાથી) કરોડ ગુણેં લાભ થાય, અને જ્યારે યાત્રા કરીને નીચે ઉત્તરે ત્યારે ભાતું આપવાથી અનંતગુણું ઇલ મળ્યા શકે છે. વળી આ તીર્થની યાત્રાનો લાભ કેવા માટે સંધ્યપતિ વગેરે અતુદ્વિષ્ય સંધ સાચે અહીં આવે, તેમાં ગિરિરાજને જેવા પહેલાં સંધને જમાડવાથી કરોડગુણું ઇલ અને જેવા આદ જમાડવાથી અનન્તગુણું ઇલ મલે એમ કહ્યું છે.

તેમજ અપેક્ષાએ કુલ્યાણુક ભૂમિયોના વંદનનું ઇલ પણ, આ તીર્થની વંદનાથી મલી શકે છે. અચોધ્યા, મિથિલા, ચંપાનગરી, આવસ્તિનગરી, દસ્તિનાગપુર, ડેશાભી, કાશા, કાંકંદી, કાંપિલ્યપુર, ભદ્રિલાનગરી, રલવાદ નગર, શૌર્યપુર, કુંઢાબાન, અપાપાપુરી, ચંદ્રનાનપુરી, સિંહપુર, રાજગૃહ, શ્રી ગિરનાર, સમેતશિખર, વૈભારગિરિ, અષ્ટાપદ પર્વતની યાત્રા કરવાથી ને ઇલ મલે તેથી સોગળું ઇલ આ શ્રી તીર્થભિરનજનની યાત્રા કરવાથી મળે છે. તેમજ અહીં રહેલા પ્રલુબિયના પૂજનથી ને કર્મનિર્જરાહ લાભ થાય, તેથી સો ગુણેં લાભ આ તીર્થમાં અભિ ભરવાની (પ્રતિષ્ઠા)-અંજનશાલાદી પ્રતિષ્ઠા કરવીને પદ્મરાવવાયી મળે છે. અને માદિર બંધાવવાથી હજાર ગુણેં અને તેના રક્ષણુનો પ્રબંધ કરવાથી અનંત ગુણેં લાભ મલે છે. ને અભ્ય પુરષો આ ગિરિરાજના શિખ્યપર ઉપર પ્રતિમા પદ્મરાવે અથવા માદિર બંધાવે તેઓ અહીં વિશિષ્ટ અદ્ધ્યાત્માહિના સુખ લોગવીને જરૂર ઉત્તમ દેવ-લોકની નંદિ પામે છે. તથા આ શ્રી પુંડ્રાકાગિરિનું સમરણું કરી નવકારશી આદિ પરચ્યકુભાણું કરનાર પુષ્યશાલિ જીવોને અનુફરે કરેલ તપથી આગળના અધિક મોટા તપતું ઇલ મલે છે. આ પ્રમાણે આ ગિરિરાજનો અદ્યાકિક પ્રભાવ કહેવામાં આવે છે,

[૩૭૦]

શ્રી જૈન સત્ય અકારા

[૧૫૪ ૩]

ખીજન અંથોમાં એમ પણ કહું છે કે, આ ગિરિરાજનું રમરણુ કરતી વખતે જેવી જેવી મન વચન કાયાની એકાગ્રતા હોય તેને અતુસારે છઠ્ઠી માંડીને માસભમણુ સુધીના તપનો લાભ મળે છે; તેમજ શાલવિઘ્નણા જ્વેચા પણ અહીં ગણશણુ કરતાં આનંદથી દેવલેકની સંપર્દા પામે છે.

અહીં છત, ચામર, જારી, ધન, થાલનું દાન કરનારા ભવ્ય જ્વેચા વિદ્યાધરની નકદીને અને રથનું દાન કરનારા જ્વેચા-ચક્રવર્તીપણાની નકદી પામે છે. વળી કારણુસંગ તપથર્યાં કરવામાં અસમર્થ એવા ભવ્ય જ્વેચા પણ અહીં પ્રભુદેવના મૂજનકાલે દશ ફૂલની માળા ચદ્રવવાથી ઉપવાસનું, ૨૦ માલા ચદ્રવવાથી છઠનું, ૩૦ પુષ્પમાલાઓ ચદ્રવવાથી અઠમનું, ૪૦ માલાઓ ચદ્રવવાથી ચાર ઉપવાસનું અને ૫૦ માલાઓ ચદ્રવવાથી પાંચ ઉપવાસનું ઇલ પામે છે. આ તીર્થભાં પૂજન અને સ્નાતમહોત્સવ કરવાથી પણ જે પુષ્પયાતુંધિ પુષ્પ બંધાય તેવું પુષ્પ અહીં તીર્થભાં સોનૈથા, ભૂમિ, આભૂષણનું દાન કરવાથી પણ બંધાતું નથી.

આ તીર્થભાં નજીકમાં વસેલા શ્રી પાદલિમસ્પુર (પાદીતાણા)માં શ્રી પાર્શ્વનાથ અને શ્રી મહાવીરસ્વામિના સુંદર દેવાલય શોંબે છે. આ ગિરિરાજના નીચેના ભાગમાં શ્રી નેમિનાથનું વિશાળ ભવ્ય મહિં દીપે છે. મહામંત્રી ઉદાયનના પુત્ર વાગ્બટ મંત્રીએ રૂ કોડ ૬૭ લાખ દ્રવ્યનો વયુ કરી ગિરિરાજની ઉપર રહેલા શ્રી આદીશ્વર ભગવંતના મુખ્ય પ્રાસાદનો ઉદ્ઘાર કરાવ્યો હતો. અહીંના મૂળનાયક પ્રભુ શ્રી આદિહેવની ભવ્ય મૂર્તીના જ્યારે ભવ્ય જ્વેચા દર્શન કરે છે, ત્યારે તેઓનાં નેત્રો જણે અમૃતથી સિંચાયાં હોય તેવી અપૂર્વ શાંતિનો અતુભવ કરે છે.

વિં સં. ૧૦૮માં ધણું દ્રવ્ય ખરચીને જલડ રોડે શ્રી ઇપભદેવનું બિંબ સ્થાપન કર્યું. તે બિંબ તેજસ્વિ ભમ્માણુ નામના ભણિશીલમાંથી નીકલેલા જ્યોતિરસ નામના રતનનું બનાયું હતું. તે જલડ (ડિ) શેડનો હુંકો અહેવાલ આ પ્રમાણે સમજવો:—

આ રોડ મધુમતી (મહુવા બંદર)ના રહીશ હતા. તેમણે શ્રીવજસ્વામિજી મહારાજની પાસે શ્રી શત્રુંજ્ય(નુ)મહાત્મ્ય સાંભળ્યું. ત્યારથાદ તીર્થભક્તિથી અહીં આવ્યા. સુગંધિ જલથી સ્નાત કરવાની છચ્છા થઈ, પણ મૂલનાયકનું લેખભમ્ય બિંબ હતું, કેથી સ્નાતનું જલ પડવાથી બિંખને તુકશાન પહોંચે, આથી રોડ નાખુશ થયા. તેમણે ચકેશ્વરીની આરાધના કરી. દેવાચે શેદને ભમ્માણુપર્વતની આણ હેખાડી. રોડ ત્યાં રતનમય મૂર્તિ તૈયાર કરાવી રથમાં પધરાવી, તીર્થાધિરાજ ઉપર લાવવા લાગ્યા. પોતાની સ્વીસહિત રોડ રથની સાથે ગિરિરાજ ઉપર, હિવસે સાંજ સુધીમાં નેટ્લો માર્ગ ચાલે, ત્યાં રાતે પાછો તે રથ પાછો હુદી સવારે જ્યાં હોય ત્યાં થંબાય. આ હુક્કાતથી રોડ ઉદ્ઘાસ થયા. કપર્દિથક્ષણી આરાધના કરવાથી તેનું મૂળ કારણુ જાણુવામાં આવ્યું. ત્યારથાદ રથને ચાલવાના રસ્તામાં સ્વીસહિત રોડ, સાહસ કરી આડા પડ્યા (સ્ફ્રિં રથા). આવી શેદની હિંમત નેઘને સંતુષ્ટ થયેલા અધિષ્ઠાયક હેવે બિંબસહિત રથને ગિરિરાજના શિખર ઉપર સ્થાપન કર્યો. વ્યાજખી જ છે કે-સાન્નિવેદ પુરષો અશક્ય કાર્ય પણ સહેલાધીથી સાધી શકે છે. ત્યારથાદ મૂલ નાયકને બદ્ધલીને જલડ રોડે નવીન રતનમય બિંબ સ્થાપન કર્યું. એમ આ મહાકાર્યમાં ઇતેહમંદ નીવડવાથી સ્વીસહિત રોડ ચૈત્યના શિખર ઉપર ચઢી ધણું મૂશી થઈને નાચવા માંડ્યું. આ ઉપરાંત તેમણે

શ્રી પુરુષોક ગણુધરની અને કપર્દિયક્ષણી મૂર્તિઓ સ્થાપન કરી, ન્યાયોપાજીની લક્ષ્માનો સહૃદ્યોગ કરી, નિર્મલ ધર્મારાધન કરી રવર્ગની સંપર્ક મેળવી. આ શ્રીગિરિજાની ઉપર છદ્ધવાકુવંશના તથા વૃષિષુવંશના અસંખ્યાતી કોડાકોડી પ્રમાણ ભવ્ય જીવો સિદ્ધિપદ પામ્બા, તેથી આનું નામ ‘કોડાકોડી તિલક’ કહેવાય છે. અહીં સિદ્ધિપદ પામેલા પાંચે પાંડ્યોની અને કુંતીમાતાની બેઘ્યભય મૂર્તિઓ તથા રાધાણુ વક્ષ હીપી રહ્યા છે. અહીં રહેલી શ્રીકૃપભદેવની પાહુકાઓને મોર-વાધણ આહિ ધર્ષાંતિર્યો પણ નમને અણસણુ કરીને દેવઅદ્ધ પામ્બાં છે. અહીં મૂલ પ્રાસાદની ડાખી આણુએ સત્યપુરાવતાર નામનો પ્રાસાદ અને જમણી આણુએ એટલે શાકુનિ ચૈત્યની પાછળના ભાગમાં અષ્ટાપદ નામનો પ્રાસાદ આવ્યો છે. શ્રીનંદીશ્વરાહિ અવતાર નામના ભવ્ય પ્રાસાદો પણ દર્શક ભવ્ય જીવોને અપૂર્વ આનંદ આપે છે. અહીં શ્રીસ્વર્ગોરાહણુ નામના ચૈત્યમાં, આણુઊણુ નમિ-વિનભિ જેની સેવા કરી રહ્યા હોય, એવી શ્રીકૃપભદેવ પ્રભુની દિવ્ય પ્રતિમા ઝગમગી રહી છે. આ જિરિજાના બીજા ઉચ્ચા શિખરની ઉપરના ભાગમાં એચાંસ કુમાર, શ્રીશાંતિનાથ તથા નેમિનાથ અને બીજા પણ શ્રીકૃપભદેવ મરુદેવી અને શ્રીમહાલીરસ્વામી આહિનાં સુંદર બિંભો રહેલાં છે. અહીં યક્ષરાજ કપર્દિની પ્રતિમા છે. તે નમનાર ભવ્ય જીવોના અને યાવિકસંધનાં વિવિધ વિદ્ધોને જરૂર દૂર કરે છે. શ્રીનેમિનાથ પ્રભુના કહેવા પ્રમાણે ઇણણાસુદેવે અહીં રહીને આઠ ઉપવાસ કરી કપર્દિયક્ષણી આરાધના કરી, નેથી યક્ષાધિરાજે પર્વતની ગુફાની અંદર રહેલી શકેન્દ્રશી પુણ્યેલી ત્રણ પ્રતિમાઓ બતાવી, તે ગુપ્ત રાણી. સંભળાય છે કે હાલ પણ તે સ્થળે શકેન્દ્ર ધણ્યોવાર આવે છે. પાંડ્યોએ થાપેલ શ્રીકૃપભદેવના બિંભની ઉત્તર દિશામાં ડેં કુલ્લદુક તલાવડી સુધી લાંખી તે ગુફા આવેલી છે.

આ યક્ષની આરાધના કરનાર ભવ્ય જીવો પ્રતિમાનાં દર્શન પામે છે. ત્યાં શ્રીઅનિતનાથ અને શ્રીશાંતિનાથ ચોમાસું રહ્યા હતા. અહીં મરુદેવી પ્રાસાદની નાળુકમાં શ્રીશાંતિનાથનો ભવ્ય પ્રાસાદ આવ્યો છે. તે દર્શક જીવોને અપૂર્વ આનંદાયક-સંસારના તાપને ફારનારો ભાલું પડે છે. શ્રીશાંતિનાથના ચૈત્યની આગળ થોડોક છેટે જોનાની અને ઇપાની એ ભાણુ આવેલ છે, ત્યાંથી સો હાથ દૂર જતાં પૂર્વ દિશાએ આઠ હાથ નીચે સિદ્ધરસથી ભરેલી રસ્કૂપિકા (કુદ્ધ) રહેલી છે. અને શ્રીકૃપભદેવની પ્રતિમાની નીચે કર્પભડૃથી આગળ ત્રીશ ધન્ય પ્રમાણુ ભૂમિ વલોટીએ ત્યારે એક (ભારણાં જેવા) શિલા આવે છે, ત્યાં જે ભવ્ય જીવ ત્રણ ઉપવાસ કરવા પૂર્વક અલિ વિધાન કરે, તેને વૈરોટયાદેવી દર્શન હેઠે છે. તે દેવીના કહેવા પ્રમાણે શિલાને ઉધાડી, રાતે જે પુણ્યશાલિ પુણ્યો અંદર દાખલ થાય, અને એક ઉપવાસથી આરાધના કરે તેમને વિશિષ્ટ-વિવિધ પકારની ધર્ણી સિદ્ધિઓ ભણે છે. તે સ્થળે પ્રભુશી આહિદેવના બિંભને ભાવથી વિધિ પૂર્વક નમરકાર કરનારા ઉત્તમ જીવો ચતુર્વિધ સંસારની કર્મનિત ધર્ણી રખડપદી દાલીને એક છેલ્દો મનુષ્ય ભવ પામી જરૂર સુક્રિના સુખ પામે છે. ત્યાંથી આગળ પાંચસો ધનુષ્ય (પ્રમાણ ભૂમિ) વળોટીએ ત્યારે એક ભવ્ય પાયાણ (ભય) કુંડિકા (કુંડી) આવે છે. તેથી આગળ સાત ઉગલા-જઠને જે પુણ્યશાલિ સમજુ ભવ્ય જીવો અલિ (અલિ બાકળા)નો વિધિ જગવી શિલા ઉપાડી અંદર જઈ એ ઉપવાસથી આરાધના કરે, તેમને હાથમાં રહેલા આમળાની માઝક રસ્કૂપિકાનું દર્શન થાય છે. (અપૂર્વુ)

अतिचारनी आठ गाथाओं

लेखकः—श्रीयुत प्रै. हीरालाल दसिकहास कापडिया, एम. ए.

अत्यार सुधीमां में डेटलांक प्रतिफलस्थुस्त्रो विषे बिहापोष कर्यो छे. आजे एवं एवा अन्य सूत्र विषे विचार करवा हुं प्रवृत्त थाउं छुं. आ सूत्र ते भीजुं कोई नहि पथु हैवसिक प्रतिफलम् उरती वेणा नीन आवस्यकनी सुभवस्त्रिङ्कानुं प्रतिवेष्टन करवा पूर्वं ने आठ गाथानो अने ते न आवडती होय तो आठ नवकारनो कायेत्सर्गं कराय छे ते छे. विशेषमां आ आठ गाथाओं पाक्षिक, यातुर्मासिक अने सांवत्सरिक अतिचारनी आवेदना समये पथु ऐलाय छे. आ आठ गाथाओंने भोटा भाग अतिचारनी आठ गाथाओं तरीके ऐण्डे छे. आ संबंधमां पं. सुभपाललुओं प्रतिफलस्त्रो एमणे संपादित करेली हिंदी आवृत्ति (पृ. ६४) मां नीचे सुन्न उद्देश कर्यो छे:—

“यद्यपि ये गाथायें ‘अतिचारकी गाथायें’ कहलाती हैं तथापि इनमें कोई अतिचार का वर्णन नहीं है; सिर्फ आचार का वर्णन है. इसलिये ‘आचार की गाथायें’ यह नाम रखा गया है.”

२०४ भा पृष्ठमां एमणे कहुं छे:—

“इस में पांच आचारों का स्मरण किया जाता है, जिससे उनके संबन्ध का कर्तव्य मालूम हो और उनकी विशेष शुद्धि हो.”

हुं सभजुं छुं त्यांसुधी अतिचारनी आठ गाथाओंने आचारनी गाथा तरीके सौथी प्रथम ऐग्रावनार पं. सुभलाललु छे. विशेषमां तपास करतां एम लग्नाय छे के एमनी सामे एमना भतना निरसन इपे केअध्ये पण् सौथी प्रथम लभाणु कर्युं होय तो ते आगमोद्धारक नैनायायं श्री. आनंदसागरसूरि छे. आ सुन्न गुण्ये सिद्ध्यक्षुक (व. ४, अ. ६, पृ. १२७-१२८) मां आ संबंधमां बिहापोष कर्यो छे. तेमांया अन प्रस्तुत पंक्तिओं हुं उद्धृत करे छुं:—

“उपर्युक्ता आठ गाथाओंनो अहों ने उद्देश उरवानां आयो. छे ते गाथाओं अतिचार गाथा तरीके सुप्रसिद्ध छे, त्यारे हवे आजे डेटलांक अर्धदृष्टे एमुं कहेवाने नीक्ष्या छे के ए अतिचार भावा नयी, ए तो आचार गाथाओं ज छे. आचार गाथाने आपणे अतिचार गाथा कहीओ धीओ ते काँचि पांच पचास वरस्थी कहेता नयी, परंतु त्रिणु सो वर्ष्यी ए गाथाओं अतिचार गाथा तरीके शास्त्रोमां सुप्रसिद्ध छे.....

सेनसूरिण पण् एकै स्थगे स्पष्ट रीते एम कहे छे के आठ अतिचारनी गाथा न आवडे तेणु आठ नवकार चिंतवी लेवाय छे... ... प्रतिफलस्त्रु करती वेणाओ तमे ने गाथा विचारो छे, ते गाथा अतिचार भाटे विचारो छे। के आचार भाटे विचारो छे, ते

१ आ स्थान ते कयुं तेनो २५७१ निर्देश करवा सूरिणे भरी साहर विज्ञप्ति छे.

આંક ૧૦-૧૧]

અતિચારની આડ ગાથાઓ

[૩૭૩]

તપાસી જુઓ. ચોથું આવસ્યક પ્રતિક્રમણ નામનું છે ને તેમાં લાગેલા જ્ઞાનાચારહિના દોષો આદોવવાના હોથ છે ને તેમાં આદોવવા અતિચારોમાં દિવસ કે રાત્રે લાગેલા વિશેષ અને વ્યક્ત અતિચારોને ગુરુ સમક્ષ પ્રાયશ્રિત લેવા માટે ચિંતવવા જોઈએ અને તે અતિચારો ચિંતવવા માટે જ આ કાઉસસંગ ને આ ગાથાઓ છે. વળી જ્ઞાનાચારની ગાથામાં વ્યાખ્યાન, અર્થ અને તહુભયનું ઉલ્લંઘન તો ખુદ અતિચાર ઇપેજ છે..... તમે આ આહ ગાથાઓ નિયારો છો તેનું કારણ એ છે કે તમારો જ્ઞાનાચાર, દર્શનાચાર, ચારિત્યાર, તપાચાર અને વીવાચાર એ તમે ન કરો હોથ તેની ખામી જોવાને અર્થેજ તમે આ માથા નિયારો છો એથી જ શાસ્ત્રકારોએ પણ તમારા અતિચારમાં પણ એની એજ ગાથા મુજબ છે! ત્યાં આચાર તરીકે આચાર જોવાના નથી, પરંતુ અતિચારના મુજબથી ત્યાં આચાર જોવાના છે. અતિચાર સ્મરણને માટે ગણ્યાતી ગાથા તે અતિચાર ગાથા છે. જે દૂષણોનો ત્યાગ કરવાને અર્થેજ આ ગાથાઓનું સ્મરણું કરવાનું છે. ખીજુ વાત એ ખ્યાલમાં રાખવાની છે કે અહીં સુરૂત અનુમેનનો પણ વિષય નથી. અહીં દૃષ્ટિતનિંદન અને પ્રાયશ્રિત માટેજ આ ગાથાઓનું સ્મરણું કરવામાં આવતું હોવાથી શાસ્ત્રકાર મહારાજાઓએ તેને અતિચાર ગાથા કહી છે તે સર્વથા વ્યાખ્યાજી જ હરે છે.”

આ ઉપરથી નીચે મુજબની લક્ષીકરો ઇલિત થાય છે:—

(૧) બાબુ દષ્ટિએ આ આહ ગાથાનો વિષય ‘આચાર’ છે એ સંબંધમાં પણ સુખલાલલુ અને શ્રી જ્ઞાનાંહસાગરસૂરિ પ્રાય: એક ભત છે. પ્રાય: કહેવાનું કારણું એ છે કે ખીજુ ગાથાના ત્રીજા ચરણમાં અતિચારનો ધ્વનિ છે એમ સૂરિલુ કયે છે અને એસે અશે એઓ જુદી પદે છે.

(૨) ત્રણસો વર્ણથી આ ગાથા અતિચારની ગાથા તરીકે સુપ્રસિદ્ધ છે. સેન-સૂરિલુનો પણ એ જ ભત છે.

(૩) આ ગાથાના ઉપયોગને-ઉદેશને લક્ષ્યમાં રાખીને એનું અતિચારની ગાથા એ નામ ચરિતાર્થ થાય છે. અને શાસ્ત્રકારોએ તેમ જ કર્યું છે.

આ સંબંધમાં માઝે નાનું વહેન્ય એ છે કે ખીજુ ગાથાના ત્રીજા ચરણમાંથી અતિચારનો ધ્વનિ નીકળે છે એ વાત વિશેષત: ૨૫૪ રીતે રણુ કરવાની આવસ્યકતા છે,

ખીલું શ્રી. વર્ધમાનસૂરિએ પોતાની કૃતિ નામે આચાર હિનકરના ૨૧૦ અ પત્રમાં આ ગાથાઓ રણુ કરતી વેળા નીચે મુજબ ઉલ્લેખ કર્યો છે:—

“કાયોત્સર્વે અતિચારગાથામિરાલોચ્યા યથા—”

આ ઉપરથી જોઈ શકાય છે કે આચાર હિનકરના કર્તા પણ આને અતિચાર ગાથા તરીકે સંભેદે છે. એમને સમય વિઠુમની અન્યારમી સહી હોથ એમ આચાર હિનકર (ભા. ૧) ની પ્રસ્તાવના ઉપરથી અતુભનાય છે, કેમકે ત્યાં એમને શ્રી. જિનેશ્વરસૂરિલુ (વિ. સં. ૧૦૮૦) ના ગુરુ તરીકે એણાબ્યા છે.

ત્રીલું, ને રીતે કે કૃતિનો ઉપયોગ કરતો હોથ તે ઉપરથી તેનું નામ ચોણ શકાય એના સર્વમર્યાદામાં એવા કોઈ અન્ય કૃતિનું ઉદાહરણ રણુ થઈ શકે તેમ છે કે નહિ? અને જો થણું હોથ તો તેવી જૈન કે અજૈન કૃતિનો નામોલ્લેખ થવો ધરે.

[૩૭૪]

શ્રી જૈન સત્ય પ્રકાશ

[બધું ૩

આ તો આ ગાથાના નામકરણુંની ચર્ચા થઈ. હવે આ ગાથાઓના કર્તૃત્વ વિષે વિચાર કરીશું.

સામાન્ય રીતે જેવાય છે તેમ અનેક ઇતિહાસીની પેટે આના કર્તૃત્વ પરત્વે કરશો જ સ્પષ્ટ ઉત્ક્ષેપ જણાતો નથી હેવસિક અને શાન્તિક પ્રતિક્રમણુંમાં આ ગાથાઓએ એકવાર બોલાય છે તો બાકીનાં પાદ્ધિકાદિ ત્રણું પ્રતિક્રમણુંમાં એ એ વાર બોલાય છે તેમ છતાં આ પ્રમાણે આને પ્રતિક્રમણુંમાં કોણે કયારથી સ્થાન આપ્યું તેનો નિર્દેશ કરાવેલો જેવાતો નથી.

વિશેષમાં આની બીજીથી માંડીને આહારી ગાથા દસવેયાલિય નિજળુદ્ધિની ૧૮૪ મી, ૧૮૮ મી, ૧૮૫ મી, ૧૮૬ મી, ૪૭૨ મી, ૪૮ મી અને ૧૮૭ મી ગાથા સાથે અક્ષરસ્થ : ભગી આવે છે. વળી પહેલી ગાથાનો આશય ૧૮૧ મી ગાથામાં જેવાય છે. આ પ્રમાણે અતિય રની લગભગ બધી ગાથાઓ નિર્ધૂક્તિમાં નજરે પડે છે. આ ઉપરંતુ આની બીજી ગાથા ઉત્તરાઙ્ગયણુંસુત (અ. ૨૮) ગા. ૩૧ તરીકે નહિ જેવા પાછલેખ્યર્વકૃત દાણીઓયર થાય છે, એવી રીતે આની છઢી અને સાતમી ગાથા ઉત્તરાઙ્ગયણુંસુત (અ. ૩૦) ની આહારી અને ૩૦ મી ગાથા તરીકે કંઈક ફેરફાર સાથે^૪ ઉપલબ્ધ થાય છે. વળી આની પહેલી ગાથાનું પહેલું ચરણ નંદીસુતની ૨૬ મી ગાથામાં નજરે પડે છે. અને એની બીજી ગાથાનો પૂર્વાર્ધ આવસ્યક નિજળુદ્ધિની ૧૫૬૧ મી ગાથાનાં પૂર્વાર્ધ સાથે મળતો આવે છે.

આથી એ પ્રશ્ન ઉદ્ઘાટને છે કે શું અતિયારની સાત ગાથાઓ નિર્ધૂક્તિકારની પૂર્વે થઈ ગવેલા કોઈ મહાતુભાવે રચી છે કે નિર્ધૂક્તિકારે સ્વતંત્ર રીતે રચેલી સાત ગાથાઓને આગળ જતાં એમણે કે અન્ય કોઈએ અતિયારની ગાથા તરીકે સ્થાન આપ્યું છે ? વળી એમ પણ પ્રશ્ન ઉપરિથિત થઈ શકે તેમ છે કે ઉત્તરાઙ્ગયણુંસુત (અ. ૩૦)ની આહારી ગાથા રચાયા બાદ નિર્ધૂક્તિકારે એ ઉપરથી ૪૭ મી ગાથા રચી હશે કે એ ૪૭ મી ગાથા ઉપરથી ઉત્તરાઙ્ગયણુંસુતમાં ૩૦ મા અધ્યયનમાં એને સ્થાન મળ્યું હશે ? એવી રીતે બીજી એ ગાથાઓ માટે પણ પ્રશ્ન ઉડે છે. આવી પરિસ્થિતિમાં આના કઠુતવના પ્રશ્ન વિષે અતિમિ નિર્ણય આપવાનું કામ હાલ તુરત હું મેન્ડું રાખ્યું છું અને એ દરમ્યાન હું તંદ્રોને આ પ્રશ્નનો સપ્રાણુ ઉત્તર સૂચવવા વિરમ્યો હું.

સાંકૃતિકશરી, ગોપીપુરા-સુરત. તા. ૨૭-૧૨-૩૭

૨ આ ગાથામાં અને તત્ત્વાર્થાધિગમસૂત્રના ભાષ્ય (પૃ. ૨૪૦)માં ને તક્ષાવત છે તેના સંબંધમાં જુઓ આર્હતાર્થીનાદીપિકા (પૃ. ૧૧૦૭)

૩ ‘પ્રમાવણ અદૃ’ ને બદ્લે ‘પ્રમાવણોદૃતે’ એવો પાડું છે.

૪ ‘વિત્તીસંસ્વેચ્છાં રસચાઓ’ ને બદ્લે ‘મિક્રખાયરિયા ય રસપરિચ્છાઓ’ એવો પાડું છે. અને ‘જ્ઞાણ ઉસ્સગ્નો વિ અ’ બદ્લે ‘જ્ઞાણ ચ વિઉસ્સગ્નો’ એવો પાડું છે.

૫ જુઓ ચતુર્થભાગનું પત્ર ૮૦૫ અ. અહીં ઉત્તરાર્થી નીચે મુજબ અપેલું છે:—

“વીરવયણમિ એ વત્તીસં સાવયા ભણિયા ॥ ૧૬૬૧ ॥”

श्रीवादिदेवसूरि

लेखकः—श्रीयुत नथमलजी विनौलिया.

श्रीमद्देवगुरो सिंहासनस्थे सति भास्वति ।

प्रतिष्ठायां न लग्नानि, वृत्तानि महतामपि ॥ श्री प्रभाचन्द्रसूरि ।

इस बातको व्यतीत हुए साडे आठ सो वर्ष व्यतीत हुए हैं जबकि आकृ के आसपास का प्रदेश अष्टादशसती नामसे प्रसिद्ध था । उसके अन्तर्गत महाहृत नामक एक नगर था जो कि बड़े बड़े पर्वत और हरी हरी झाडियोंसे घिरा हुआ था । इसी नगर में पौरवाड़ वंश का एक गृहस्थ रहता था । उसका नाम वीरनाग था । उसकी पत्नीका नाम जिनदेवी था । स्वभावमें शान्त, शिक्षित और रूपमें रम्भा समान थी । इस दम्पती में गाढ़ प्रेम होने के कारण इनका यह संसार आनन्दपूर्वक चलता था ।

एक समय जिनदेवी रात्रि को सोती हुई थी, उस समय उसे एक स्वप्न आया । वह स्वप्नमें यह देखती है कि, मानो चन्द्रमा उसके मुँहमें प्रवेश कर रहा है । यह स्वप्न देखकर वह जाग उठी और पंचपरं बेडिका स्मरण करने लगी । प्रातःकाल स्नानादिसे निवृत्त हो जिन मन्दिर गई । प्रभुके दर्शन कर गुरुवंदन करने गई उस समय वहां तपगच्छीय आचार्य मुनिचन्द्रसूरि विराजते थे । उनका ज्ञान सागर समान गम्भीर और चरित्र चन्द्रसे भी अधिक निर्मल था और उपदेश में उनका सानी रखनेवाला दूसरा कोई न था ।

जिनदेवी ने गुरुदेवको भक्तिपूर्वक नमस्कार किया और रात्रिमें आया हुआ स्वप्न गुरुमहाराजके समझ निवेदन कर उसका फल पूछा । गुरुमहाराज स्वप्नशास्त्र के निष्णात थे अतः उन्होंने कहा, “ बहिन ! इस स्वप्न के फल स्वरूप तुम एक चन्द्र समान पुत्रको जन्म दोगी, जिसका प्रकाश समस्त भूमण्डल पर पड़ेगा ।

जिनदेवी गुरुदेव के उपर्युक्त बचन सुन कर प्रसन्न होती हुई अपने घर लौटी । नौ मास सात दिन के पश्चाद् गुरु महाराज के कहे अनुसार विं सं० ११४३ को जिनदेवीने एक महान तेजस्वी पुत्ररत्न को जन्म दीया । जिस समय बालक गर्भमें आया उस समय माताको चन्द्रमा का स्वप्न आया अतः उसका नाम पूर्णचन्द्र रक्खा गया । पूर्णिमाका चन्द्र जब अपनी सम्पूर्ण कलासे विकसित होता है तब वह शनैः शनैः घटने लगता है । किन्तु पूर्णचन्द्र तो बालेन्दु के सदृश दिन प्रति दिन बढ़ता जाता था । इस प्रकार पूर्णचन्द्र खेलते कूदते बड़ा हुआ ।

एक समय महाहृत ग्राममें मयङ्कर रोगका उपद्रव हुआ। इससे समस्त ग्राममें त्राहि त्राहि मच गई। लोग गाम छोड़कर अन्यत्र जाने लगे। आवक वीरनागने भी महाहृत छोड़ दक्षिण की ओर प्रयाण किया। मार्गमें भृत्य नगर आया। उस समय यह नगर बड़ा सुन्दर और समृद्धिशाली होने के कारण वीरनाग ने यहीं स्थिरता की। उसी असेमें मुनिचन्द्रसूरि भी परिग्रहण करते करते वहां आ पहुंचे। वीरनाग उनको वंदन करने गया, वहां स्वधर्मी बन्धुओंने उसकी सेवा शुश्राषा की और उसे भृत्य ही में ठहरने का आग्रह किया। वीरनागको तो जहां अपना निर्वाह हो वहां ठहरना ही था, अतः वहीं स्थिरता की। उसकी स्थिति साधारण होने के कारण घर का कारोबार जरा कठिनता से चलता था।

पूर्णचन्द्र जब आठ वर्ष का हुआ तभी से उसे धन्धा शुरू करना पड़ा। कारण उसके घरकी अर्थिक स्थिति अच्छी न थी। वह भिन्न भिन्न प्रकारके मसालेकी फेरी करने लगा।

एक दिन पूर्णचन्द्र फेरी करने गया, वहां क्या देखता है कि एक शेठ घरमें से धन बाहर फेंक रहा है। वह शेठ अपने धन को कोयले के रूपमें देखता था अर्थात् उसके दुर्भाग्यसे वह धन कोयला हो गया था। यह हृश्य देख पूर्णचन्द्र को बड़ा आश्र्य हुआ और अपने हृदय में कहने लगा कि मैं तो पैसेके बास्ते गली गली भटकता हूँ और यह व्यक्ति धन को इस प्रकार बाहर क्यों फेंक देता है? उसने शेठसे पूछा शेठ साहिब यह क्या कर रहे हैं? तब शेठ उत्तर देता है तुझे क्या काम है? तुझे इतना भी नहीं दिखाई देता है कि ये कोयले घर में पड़े हैं इनको घरसे बाहर फेंक रहा हूँ। पूर्णचन्द्र यह उत्तर सुन आश्र्य में गर्क हो गया और कहने लगा कि मुझे तो यह सब सुवर्ण मोहरे दिखाई देती हैं। तुमको कोयला क्यों दिखाई देता है?

जब सेठने पूर्णचन्द्रका यह उत्तर सुना तो वह अपने हृदय में कहने लगा कि वह बालक, अवश्य भाग्यशाली मालूम होता है। तब सेठने पूर्णचन्द्र से कहा यदि तुझे यह सब सुवर्ण मोहरे दिखाई पड़ती हैं तो इन कोयलों को इस टोकरे में भर कर मुझे दे। ज्योंही पूर्णचन्द्रने उन सुवर्ण मोहरों को स्पर्श किया त्योंही वे सेठ को भी असली रूपमें दिखाई देने लगी। जब सेठको यह ज्ञात हुआ कि इस बालक के स्पर्श मात्र से ही यह चमत्कार बना है तो वह उसपर बहुत प्रसन्न हुआ और उसे एक सुवर्ण मोहर दी।

पूर्णचन्द्र प्रसन्न होता हुआ अपने घर पहुंचा और उपयुक्त घटना पिताजीको कह सुनाई। वीरनाग अपने पुत्रकी यह आश्र्यजनक घटना सुन प्रसन्न हुए। वीरनाग ने यह चमत्कारिक घटना मुनिचन्द्रसूरि के समक्ष निवेदन की। यह बात सुन सुरिजी अपने हृदय में कहने लगे कि

आंक १०-११]

श्री वादिदेवसूरि

[३७७]

वास्तवमें यह बालक होनहार है। यदि यह बालक साधु होजाय तो जगत में धर्मध्वजा फरक सकतो है। इसलिये उन्होंने वीरनाग से पूर्णचन्द्र की मांगणी की।

वीरनाग अपने पेसे प्रभावशाली पुत्र को देते समय संकोच करे इसमें कुछ आश्रय न था।

सूरिजी वीरनाग के संकोच को समझ गए अतः उसके मनका समाधान करते हुए कहने लगे, मेरे पांच सौ साधु शिष्य हैं उन सबको तू अपने पुत्र ही समझना। यदि यह बालक विद्वान होगा तो तेरा नाम और कुल उच्चल करेगा। यह सुन वीरनागने गुरु आज्ञा शिरोधार्य की और अपने पुत्र पूर्णचन्द्रसूरि के हाथ से दीक्षित किया। उस समय उसका नाम रामचन्द्रमुनि रखा गया।

मुनिचन्द्रसूरि समस्त शास्त्रों के प्रखर विद्वान थे मानो न्यायशास्त्र तो उन्हींका था। उन्होंने इस विषयका अभ्यास प्रसिद्ध न्याय-शास्त्र श्री वादीवेताल श्रीशान्तिसूरि के पास किया था। मुनिचन्द्रसूरिने रामचन्द्र मुनिको समस्त विषयोंका ज्ञान देना आरम्भ किया। रामचन्द्र मुनि भी कुशाग्र बुद्धिके थे, अतः अल्प समय ही में व्याकरण, काव्य, छंद, अलंकार, दर्शन-शास्त्र (तत्त्वज्ञान) ज्योतिष आदि विषयों का गंभीर ज्ञान प्राप्त करे दिया।

इस प्रकार विद्वान होने के पश्चाद् रामचन्द्र-मुनि गुरु आज्ञा लेकर भिन्न भिन्न प्रदेशोंमें विहार करने लगे। उसमें खासकर धोलका, साचोर, नागोर, चितोड, ग्वालियर, धार, पोकरण, भरुच आदि शहरोंमें विहार कर वहाँ के प्रसिद्ध विद्वानोंके साथ शास्त्रार्थी कर उनको परास्त किए। इससे उनका नाम विद्वानोंमें बहुत प्रसिद्ध हुवा और निम्न लिखित विद्वानोंके साथ उनकी मित्रता हो गई।

विमलचन्द्र, हरिचन्द्र, सोमचन्द्र, पाश्वर्चन्द्र, शान्तिचन्द्र, कुलभूषण, अशोकचन्द्र, आदि।

मुनिचन्द्रसूरि रामचन्द्रमुनिकी ऐसी बढती कला देख बहुत प्रसन्न हुए। अपने प्रभावशाली शिष्य को देख किस गुरुका हृदय आनन्दित न होता होगा। उन्होंने रामचन्द्रमुनिको सम्पूर्ण योग्य समझ उनको आचार्यपद देनेका विचार किया। मुनिचन्द्रसूरिने अपना यह विचार पाटनके श्री संघके सामने रखा। श्री संघने भी गुरु आज्ञा शिरोधार्य कर बहुत बड़ा उत्सव किया और समारोहके साथ मुनिचन्द्रसूरिके हाथसे रामचन्द्रमुनिको आचार्यपदसे भूषित किया गया। उस समय उनका नाम देवसूरि रखा गया। इस शुभ प्रसंगपर उनकी भ्राताजी (फई) साध्वी होगई थी उनको

भी महत्तरा पदसे विभूषित किया और उनका नाम चन्द्रनवाला रखा गया।

(२)

आचार्य पद के पश्चात् उनका जीवन कोहिनूर हीरे के समान चमकने लगा। इनके हृदयमें धर्म के प्रति अथाग लगन थी। धर्मका गौरव बढ़ाने के बास्ते गुरु महाराज की आज्ञा लेकर मारवाड़ की ओर विहार किया। जब वे विहार करते करते आबू आए और पहाड़ पर चढ़ने लगे तब उनके साथ अम्बाप्रसाद नामक एक दीवान भी था। उसको मार्गमें काले नागने डस लिया और वह उसके विष से पृथ्वीपर गिर पड़ा। यह हृष्ट देख श्री देवसूरिने उसके सामने अपनी दयापूर्ण हृष्टि फेंकी। उनकी हृष्टि, विशुद्ध चारित्रके बलसे, इस प्रकार चमत्कारिक चन गई थी कि उस हृष्टि के पड़ते ही अम्बाप्रसाद का ज़हर काफ़र होगया और जिस प्रकार मनुष्य नींद लेकर उठता है उसी प्रकार उठ कर देवसूरि का उपकार मानने लगा।

उपर्युक्त घटना के पश्चात् यहां दूसरी घटना यह बनी कि श्री अम्बिका देवी प्रगट हो सूरजी से कहने लगे कि आप अभी मारवाड़ की ओर विराह न करो, कारण कि आपके गुरु के आयुष्य में केवल आठ ही मास शेष रहे हैं। यह सुन देवसूरि प्लोटे लौटे और पाटन में आकर गुरु सेवा में तत्पर हुए।

उस समय पाटन की राजगद्दी पर प्रतापी राजा सिद्धराज जयसिंह राज्य करता था। उसको सभा में विद्वानों को अच्छा आदर मिलता था। इसलिये वहां देश विदेश के विद्वान आकर अपनी विद्वत्ता का परिचय देते थे। राजा भी पण्डितों का अच्छा आदर सन्कार करता और उनकी योग्य कदर कर पारितोषिक देता था:—

एक समय वहां देवबोध नामक भगवत् पण्डित आया। उसने पाटन के पण्डितों की परीक्षा करने के बास्ते एक गूढ़ श्लोक उनके आगे रखा और उसका अर्थ करने को कहा। वह श्लोक निम्न लिखित था।

एक द्वित्रिचतुः पञ्चषण्मेनकमने नकाः ।

देवबोधे मयि कुद्दे, षण्मेनकमने नकाः ॥

उपर्युक्त श्लोक को सुन समस्त पण्डित चकित हो गए। इसके अर्थकी उन्होंने बहुत कोशिष की परन्तु असफल हुए। इस प्रकार द मासका समय व्यतीत हो गया। यह देख सिद्धराज जयसिंह को सखत अफसोस हुआ। वह अपने मन में विनार करने लगा कि क्या गुजरात इस प्रकार निर्माल्य हो गया है कि एक श्लोक का अर्थ छ मास में भी कोई पूरा

अंक १०-११]

श्री वादिदेवसूरि

[३७६]

नहीं कर सका? उस समय एक पुरुष ने निवेदन किया कि महाराज! अपने नगर में देवसूरि नामके श्वेताम्बर आचार्य हैं वे बहुत बड़े विद्वान् हैं। वे अवश्य इस श्लोक का अर्थ कर देंगे।

यह बात सुन राजा ने देवसूरि को सत्कार पूर्वक अपनी राजसभा में बुलाय। उन्होंने उस श्लोक का यथार्थ अर्थ कर दीया। इससे राजा, प्रजा तथा स्वयं देवबोध पण्डित भी उन पर प्रसन्न हुए।

विक्रम सम्बत् ११७८ में श्री मुनिचन्द्रसूरि का स्वर्गवास हुआ। इससे देवसूरि को जबरदस्त आघात हुआ, किन्तु मनको धीरज दे शासन सेवा में लग गए। यहाँ से मारवाड़ की ओर विहार कर वे नागोर शहर में आए। उस समय यहाँ के राजा आहादनने उनका अच्छा स्वागत किया। उस स्वागत में देवबोध पण्डित भी साथ थे। उसने सूरजी को देखते ही एक भक्तिपूर्ण श्लोक कहा:—

यो वादिनो द्विजिह्नान्, सारोमयं विषमानमुद्दिरतः ।

शम्यति स देवसूरि-र्नेन्द्रवंधः कथं न स्यात् ॥१॥

अर्थ-जो भयझर अभिमान रूपी विष को उगलने (डंख मारने) वाले वाही रूपी फणिधरों को शान्त करते हैं वह देवसूरि राजाओं को बदनीय कैसे न हो?

सूरजीने राजा को धर्मेष्टदेश देकर जैनधर्म का रागी बनाया। उन्होंने कुछ समय उस नगर में स्थिरता की। इसी असे में सिद्धराज जयसिंह ने नागोर शहर के उपर ज़बरदस्त सेना के साथ चढ़ाई की। जब उसे यह ज्ञात हुआ कि देवसूरि यहाँ विराजते हैं, तब वह बिना कुछ किए पीछा लौटा। इससे सिद्ध होता है कि सिद्धराज के उपर देवसूरि का कितना प्रभाव होगा?

यहाँ से विहार कर सूरजी कर्णावती नगरी में आए और चानुर्मासि भी यहीं रहे। यहाँ श्री नेमिनाथजी के मंदिर में धर्मेष्टदेश देने लगे। इनका उपदेश इतना सचोट और प्रभावशाली था कि उसको सुनने के बास्ते प्रत्येक जाति तथा धर्मवाले आते थे। जिन जिन ने इनका उपदेश सुना वे समस्त जैनधर्मी हो गए।

एक समय कर्णाटक के राजा जयकेशी के माननीय पण्डित कुमुदचन्द्रजी गुजरात में आए। वे दक्षिण के महान् पण्डित माने जाते थे और दिग्म्बरों के आचार्य थे। उन्होंने अपने बाद में चोरासी वादियों को हराया था। यहाँ ये वादिदेवसूरि की कीर्ति सुनकर उनको हराने के बास्ते आए थे। कुमुदचन्द्र ने सिद्धराज जयसिंह से वादिदेवसूरि के साथ शास्त्रार्थ करने को कहा। इस पर से सिद्धराजने दोनों के बादविवाद

का दिन नियत किया। बाद के लिये यथा योग्य नियम भी लिखे गए। पाटन शहर में घर घर जोरों से बार्द की चर्चा चलने लगी।

बादी प्रतिवादी दोनोंके बीचमें इस प्रकार शर्त हुई कि यदि देवस्त्रिवादमें हार जाय तो वे और समस्त श्वेताम्बर दिग्म्बर हो जाय और कुमुदचन्द्र हार जाय तो वे गुजरात छोड़कर चले जाय। यहाँ पाठक समझ सकते हैं कि देवस्त्रिको प्रतिज्ञा कितनी कड़ी थी? क्योंकि स्त्रिजीको अपनी आत्मशक्ति पर पूरा विश्वास था।

वि. सं० ११८१के वैशाख शुक्ला पूर्णिमाके शुभ दिन में यह बाद आरम्भ हुआ। राजसभामें बादी प्रतिवादी उपस्थित हुए। सभापति के स्थान पर स्वयं गुजरातके राजा सिद्धराज जयसिंह बैठे। उत्साहसागर महर्षि और राम नामके तीन विद्वान राजाके सलाहकारक नियुक्त हुए। और देवस्त्रिके पक्षमें पोरवाड जातिके महान कवि श्रीपाल और भानु नामक विद्वान थे।

राजसभा में दोनों पक्षके सभासद एकत्रित हुए। राजाने कुमुदचन्द्रको बादविवाद आरम्भ करने के लिए कहा। कुमुदचन्द्रने बाद आरम्भ करने के पूर्व राजाको निम्न आशीर्वाद देया:—

खद्योतश्चित्तमातनोति सविता जीर्णोर्णनाभालय-

च्छायामाश्रयते शशी मशक्तामायान्ति यत्राद्रयः ।

इत्थं वर्णयतो नभस्तव यशो जातं स्मृतेगोचरं,

तदस्मिन् भ्रमरायते नरपतेः वाचस्ततो मुद्रिताः ॥

उपर्युक्त स्तुति के पश्चात् कुमुदचन्द्र अपना पक्ष सिद्ध करने लगा, नग्न रहनेमें मुक्ति है, खी मोक्ष नहीं जाती और केवलो भोजन नहीं करते हैं, यह कुमुदचन्द्रका पक्ष था।

उपर्युक्त बातोंका उत्तर देने के पूर्व देवस्त्रिने राजाको निम्न आशीर्वाद दीया।

नारीणां विद्धाति निर्वृतिपदं श्वेताम्बरप्रोन्मिष्ट-

कीर्तिस्फाति मनोहरं नयपथप्रस्तारभंगीगृहम् ।

यस्मिन्केवलिनी न निर्जितपरोत्सेकाः सदा दन्तिनो,

राज्यं तज्जितशासनं च भवतश्चौलुक्य ! जीयाच्चिरम् ॥

उपर्युक्त स्तुति के पश्चात् देवस्त्रिने बड़ी खबरी के साथ कुमुदचन्द्रके सिद्धान्तांका युक्ति प्रयुक्ति से खण्डन किया, और यह सिद्ध कर दिया कि खी मोक्ष जा सकती है, केवली आहार लेते हैं। नग्नत्वके अतिरिक्त भी मोक्ष जासकते हैं। इन्होंने ये युक्तियें अपने न्यायशास्त्र के सिखानेवाले बादिवेताल श्री शान्तिस्त्रिजीकी रची हुई उत्तराध्ययन सूत्रकी टीका मेंसे ली थी। उनके धारावाहि बोलने तथा सचोट दलीलों से

अंक १०-१९]

श्रीविदेवसूरि

[३८९]

समस्त सभा देवसूरि पर मुग्ध हुइ। सूरजी का यह भाषण सुन कुमुदचन्द्र निरुत्तर हो गए। उनका मुह निस्तेज हो गया और जिस प्रकार डबता हुआ मनुष्य तिनकोंका सहारा लेता है, उसी प्रकार अन्य कुछ न सूझने पर उनने देवसूरि के वाक्यों में व्याकरण की एक भूल निकाली किन्तु वह भूल श्री ही नहीं। उस सम्बधी मत लेते हुए उत्साह पंडितने स्पष्ट कहा कि देवसूरि का शब्द व्याकरणकी दृष्टि से शुद्ध है। यह सुनकर कुमुदचन्द्र चिलकुल ठंडे पड़ गये। सभापति ने अन्य सदस्यों का मत लेकर निर्णय प्रकाशित किया कि देवसूरि की विजय हुई और कुमुदचन्द्रकी पराजय हुई है। इससे देवसूरि की सर्वत्र विजय घोषणा हुई। यह वाद लगातार पन्द्रह दिन तक चला और इसकी नोट राज्य के दफतर में लो गई। उस प्रसंगकी याद के वास्त सिद्धराज जयसिंह एक लाख द्रव्य और बारह गांव भेट करने लगा, किन्तु देवसूरिने अपने साधुभर्मानुसार उसे स्वीकार करने की स्पष्ट मना की। जब अधिक आश्रह किया गया तब उस द्रव्यसे श्री ऋषभदेवजी का मन्दिर बनवाया गया। उसकी प्रतिष्ठा के अवसर पर श्री देवसूरि के साथ अन्य तीन आचार्य भी उपस्थित थे। कुमुदचन्द्र की हार होने से वह दक्षिण की ओर लौट गए।

वादिदेवसूरि के परम भक्त नागदेव और थाहड नामक श्रीमन्त शावकों ने इस विजय के उपलक्ष में बहुत बड़ा उत्सव किया और हजारों का दान दिया। वादके समय उपस्थित रहे हुए कलिकाल-सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य आदि पण्डितोंने इस वादकी भूरि भूरि प्रशंसा की है। इसके पश्चात् के ग्रन्थकारोंने भी इसकी शूब प्रशंसा की है। “मुद्रितकुमुदचन्द्र” नामक नाटक भी इस प्रसंग को याद रखने के लिए लिखा गया है।

वादिदेवसूरिने अनेक वाद विवाद कर इस विषय में जो गम्भीर अनुभव प्राप्त किया, उस अनुभव का वर्णन उन्होंने “स्याद्वादरत्नाकर” नामक ग्रन्थ में लिखा है। स्याद्वादरत्नाकर प्रमाणनयतत्वालोक की बड़ी स्वोपन्न टीका है। उसमें अनेक वाद भरे हुए हैं। उसका विषय गहन होते हुए भी उसकी भाषा प्रौढ़, सुन्दर तथा सरल है। कहा जाता है कि यह सारा ग्रन्थ चौरासी हजार श्लोकोंका था। वर्तमान में उसके लगभग पच्चीस हजार श्लोक मिलते हैं॥ शेष श्लोकों का नाश मुसलमानों के हाथ से हुआ है या किसी भेड़ार में पड़े हों ठीक नहीं कहा जाता॥

इसके अतिरिक्त उनके बनाए हुए भिन्न भिन्न ग्रन्थों की सूचि निम्न लिखित है:—

- (१) प्रमाणनयतत्वालोक
- (२) स्याद्वादरत्नाकर (प्रथम ग्रन्थ को टीका)
- (३) जीवानुशासन
- (४) मुनिचन्द्राचार्यस्तुति
- (५) गुरुविरहविलाप

[३८२]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[१५४३]

(६) द्वादशव्रतस्वरूप। (७) कुरुकुलादेवी स्तुति। (८) पाञ्चवधरणोन्नदस्तुति। (९) कालिकुण्ड पार्श्वजिन स्तवन। (१०) यति दिन चर्या। (११) जीवाभिगम लघुवृत्ति। (१२) उपधानस्वरूप। (१३) प्रभात स्मरण स्तुति। उपदेश कुलक। (१५) संसारोद्धिग्न मनोरथ कुलक।

वादिदेवस्वरिने साहित्य सेवाक अतिरिक्त अनेक जैनतरों को जैन बनाए हैं। उनको संख्या लगभग पेंतीस हजार की मात्री जाती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने धोलका, पाटन, फलांदी, आरासण आदि गांवों में प्रतिष्ठा भी करवाई है। उनके दीक्षित किये हुए शिष्यों की संख्या सैकड़ों की थी। जिनमें से मुख्य शिष्यों के नाम निम्नलिखित हैं:—

(१) भद्रश्वरस्वरि। (२) रत्नप्रभस्वरि। (३) माणिक्य। (४) अशोक। (५) विजयसेन। (६) पूर्णदेवाचार्य। (७) जयप्रभ। (८) पञ्चचन्द्रगणि। (९) पञ्चप्रभस्वरि। (१०) महेश्वरस्वरि। (११) गुणचन्द्र। (१२) शालीभद्र। (१३) जयमंगल। (१४) रामचन्द्र।

उनके गृहस्थ शिष्योंमें थाहड, नागदेव, उदयन, वाग्भट आदि अनेक श्रीमंत श्रावक थे।

उनका विहार खासकर मारवाड, मेवाड और गुजरात ही में हुआ था।

इस प्रकार जीवन पर्यंत जैनधर्मकी अनन्य सेवा कर श्रीवादिदेवस्वरि चि. सं. १२२६के श्रावण कृष्ण सप्तमी गुरुवार के दिन मनुष्य लोकको छोड स्वर्गवासी हुए। पूर्णवी पर उनकी पूर्ती करनेवाला अवतक कोई उत्पन्न नहीं हुआ।

उपसंहार—आज वादिदेवस्वरि अपने समक्ष नहीं है, किन्तु उनकी कृति, कीर्ति, प्रखर शासनसेवा जीती जागती खड़ी है।

धन्य हो इस पोरवाड जातिको कि जिसने वादिदेवस्वरि समान अनृष्टे नररत्नको उत्पन्न कर अपना गौरव बढ़ाया है।

कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यने वादिदेवस्वरिकी इस प्रकार स्तुति की है:—

यदि नाम कुमुदचन्द्रं न ज्ञेस्यहेवस्वरिरहिमरुचिः।

कटिपरिधानमधास्यत् कतमः खेताम्बरो जगति ? ॥ *

* इस लेखके लिखने में स्वर्गीय न्याय साहित्य तीर्थ मुनिराज श्री हिमांशुविजयजीने मुझे पूर्ण सहायता दी थी। अतः इस लेखका समस्त श्रेय उन्हींको है।

छाणिमंडन श्री शान्तिनाथ-स्तुत्यष्टकम्

प्रणोदा-सुनिराज श्री भद्रकरविजयजी

[पञ्चचामरेण गीयते गीतमिदम्]

सहस्रनेत्रमौलिकोऽिच्छुम्बितांविपङ्क्जं ।

ज्यवलतप्रतापवहिनदाहदग्धशानुपुञ्जकम् ॥

कलङ्कशून्यवकुत्रकान्तकान्तिर्जिताव्जकं ।

स्तवीमि शान्तिनाथमाचिरेयमेणांछनम् ॥ १ ॥

अवार्यवीर्यमद्वृष्टकर्मसलनाशकं ।

कृपासुधानदीशवीचिगुभानालोचनम् ॥

चिरोपभुजसार्वभौमसार्थमंपदं प्रभु ।

नमामि छाणिपुःस्थितं मृगाङ्कशान्तिनाथकम् ॥ २ ॥

अजश्यदर्पकस्य दर्पसर्पनाशकाश्यपि ।

मनुष्यमङ्गलप्ररोहरोऽनीरसनिभग्म ॥

सवाद्यमंजुनाकियोवतप्रगीतगीतकं ।

नमामि छाणिपुःस्थितं मृगाङ्कशान्तिनाथकम् ॥ ३ ॥

ननर्तकी तिनर्तकी विशाललोकमण्डपे ।

मनोऽश्वकुण्डले जितावजमण्डले रगजनुः ॥

चकास्ति यस्य नेत्रपश्चायुग्ममालयं सुदां ।

नमामि तं च शान्तिनाथमाचिरेयमर्च्यकम् ॥ ४ ॥

भवन्ति यतप्रसादमाप्य लक्ष्मणा जना घनाः ।

मुमुक्षवो महोदया मनोऽश्वमुक्तिव्यवराः ॥

प्रभावशालिनं नितान्तसम्मदामृतप्रदं ।

नमामि तं च शान्तिनाथमाचिरेयमर्च्यकम् ॥ ५ ॥

अभालुलाटवित्रकं विशालपुष्करेऽब्जवत् ।

चललुलन्तिका रराज यस्य अंजुलामला ॥

जिनावतंसमविज्ञनीपतेजमं गतेन सं ।

नमामि तं च शान्तिनाथमाचिरेयमर्च्यकम् ॥ ६ ॥

समुद्रचन्द्रवाकप्रतजिताब्रनादवादकं ।

जगद्यथेमितेप्सितप्रदानकल्पकल्पकम् ॥

जनाधधूमयोनिराजिनाशने समीरणं ।

नमामि छाणिपुःस्थितं मृगाङ्कशान्तिनाथकम् ॥ ७ ॥

स्मृतिश्च यस्य दर्शनं प्रपुजनं सुगीतकं ।

प्रसादना ददाति भूस्पृशोऽश्रुसिद्धिचित्सुखम् ॥

सुजैनसंप्रतिक्षमाध्रकारितं च विवकं ।

नमामि तं च शान्तिनाथमाचिरेयमर्च्यकम् ॥ ८ ॥

[शार्दूलविकीर्णिदितम्]

व्याख्यानुर्जगतीपतीतयशासः श्रीलघ्वसूरिप्रभो-
रन्ते सद्भुवनाभिधस्य शमिनः श्रीमद्गणीशस्यवै ॥

तच्छिष्येण पदाम्बुजातरजसा भद्रङ्करेणाणुना ।

हंसाब्जान्तमियं स्तुतिर्वरचि सा लघ्वी च जीयाच्चिरम् ॥ ९ ॥

जैनधर्ममां स्त्रीसमाजनुस्थान

[अक्षयासक्ष दिव्ये एक हण्डुं अवलोकन]

लेखकः—सुनिराज श्री. दर्शनविजयल

पुरुष अने स्त्री ए अनाहिथा स्वयंभिन्न छनां समान आकारवाणी जातियो छे. द्वैक प्राणीसमाजमां आ “नने जातियोनी भिन्नना अने अभिनन्ता सामान्य तथा विशेषताए समाज शक्ति छे. छतां समष्टिगतवालारमां ते बन्ने एक जाति इपे ज भनाय छे.

पाश्चात्य देशानां प्राचीन धर्मशास्त्रो पुरुष तथा स्त्रीने एकहम भिन्न भानी पुरुष-ने ज सर्व ऐष प्रवानता अर्पे छे.

आर्यावर्तनां वेह वगेरे धर्मशास्त्रो पछु स्त्रीने पुरुषथी उतरते ते स्थाने स्थाने छे, अने ते अनेना वास्तविक अधिकारमां पछु लेह पाडे छे.

जैनहर्थन आ निषयमां जोतानी एक चेक्कस अने स्वतंत्र भान्यता धरावे छे. अने पुरुष तथा स्त्रीमां रहेक शारीरिक भेदो ज भाव लेहगे मानी अने आटे शरीर-योग्य तथा तेना सम्बन्धित अधिकारोमां ज भेद भाने छे. बाटा धार्मिक के आतिथिक दृष्टिए पुरुष के स्त्रीमां डोच जातनो विशेष लेह होवानो साह छन्कार करे छे.

धर्मसेवन अने तेनां परभायं इबनी प्राप्ति भाटे पुरुष तथा स्त्रीनां भन, वाणी तथा शरीर समान शक्तिवालां छे याने स्त्री तथा पुरुषो, धर्म तथा धर्मद्वय-मोक्ष भाटे समान अधिकार छे एम जैनधर्म भाने छे. जैनधर्मनी आ भान्यता भाव इन्पना इप नथी किन्तु एक नक्कर सलहपे छे. जेनां प्रभाण्या नीचे मुख्य छे.

जाति, जाति, भ्राय, योग, पर्याप्ति, व्याघ्रन, देस्या, संघातन, संहनन, संस्थान, व्रसादि, संसित्य, शान, दर्यन वगेरे द्वारा पुरुष के स्त्रीमां कठो भेद नथी.

पुरुष अने स्त्रीमां जे भेद छे, ते भाव शरीररथनानो ज भेद छे, परंतु शरीररथनामां नामकर्मनी ज प्रवानता छे, के जेमां पुरुष स्त्री वगेरे भेदो अतावानार वितर प्रदृतियोनो उद्देश्य ज नथी.

दा, नामकर्ममां औहार्क शरीर, अजोपांग आहि अनेक प्रदृतियो छे, किन्तु पुरुष स्त्री के नपुसक्ते सूचनार डोच स्वतंत्र उतर प्रदृति नथी.

विशेष विचार उन्हो तो अवाणुनिय आहि पांचे दृष्टियना दृष्य तथा भावउप भेदो दर्शाव्या छे ज्यारे पुरुष तथा स्त्रीनो शरीररथनामां रहेक अगमेह भाटे एनुं कशुं विधान नथी.

यद्यपि पुरुष वगेरेना शरीरमां त्रिषु नेहो नोकर्म इपे रथनाभेद छे, परन्तु एथा पुरुष के स्त्रीना भतुष्यत्वमां भेद छे एम तो नथी ज. यदि एवा विद्विभेदी भतुष्यत्वमां भेद पाहो देख तो अधीना, अधीना भक्ता, अने हाथ फगनी ज आंगलीओ

આંક ૧૦-૧૧]

જૈનધર્મમાં સ્ત્રીસમાજનું સ્થાન

[૩૮૫]

ધ્રુવાદિ કારણે જાન આહિમાં બેદ માની મનુષ્યત્વમાં બેદ રવીકારદો પડે. આથે વિચાર કર્યા પછી એ નિર્ણય પર આપાં અનિવાર્ય છે કે પુરુષ અને સ્ત્રીના મનુષ્યત્વમાં વાસ્તવિક રીતે કદ બંદ નથી. અને એમ હોવથી નામકર્મમાં તર્દદખયક સ્વતંત્ર ઉત્તર પ્રકૃતિઓ પણ નથી.

આ રીતે પુરુષ અને સ્ત્રીમાં નામકર્મની અપેક્ષાએ ખાસ બેદ પડો નથી, તો પછી તેમનાં તપ, જ્ય, વ્યાન કે માનસિકશક્તિમાં વાસ્તવિક બેદ હોવાનું મનાય જ કેમ?

આ તો આપણે ભાગ કર્મની અપેક્ષાએ વિચાર કર્યો, દવે આપણે પરમ તારક શ્રીતિર્થનું રહેવની વાણી તરફ વળ્ણાએ.

પરમ તારક શ્રી તીર્થનું રહેવે, કેવલજાન પ્રાપ્ત થતાં જ તીર્થની રથાપના કરે છે. અને ઉપરેશના પ્રારંભમાં જ નમો તીત્થસ્સ શખ્ષ વડે તીર્થને નમસ્કાર કરે છે. ને આ 'તીર્થ' શખ્ષથી સાધુ, સાધી, શ્રાવક અને શ્રાવિકા એ ચતુર્વિધ સંબંધ કેવાય છે. નેમાં એ પુરુષ સંદેશ છે અને એ સ્ત્રી સંદેશ છે જે વંદનાય-માનય છે.

શ્રી તીર્થનું રહેવે કેવળ આત્મવિકસ મારે જ નહીં દિન્તુ મોક્ષને મારે પણ પુરુષ કે સ્ત્રી દરેકને સમાન અધિકારી ઉપરેશ્યા છે.

પુરુષ અને સ્ત્રી સમાન કલ્પામાં છે એનાં આ સમજ પ્રમાણે છે.

૫૦ આં શ્રી વિજયવદભીસુરિ મહારાજાએ પર્યુષણું અણાનિહિત વ્યાખનમાં પ્રશ્નોત્તર આપી પુરુષ તથા સ્ત્રીનો સમાનતા સિદ્ધ કરી છે તેમાંથી દરમાવે છે કે:-

ગુણ તથા દોપની અપેક્ષાએ પુરુષ તથા સ્ત્રી સરખાં છે.

ભરતેશ્વર બાહુભિનું વગેરે ડતમ પુરુષ છે. અભાઇ રાડોડ, કાલિકાસુર કસાઈ વગેરે અધમ પુરુષ છે. રાજેમતી, ચંદ્રનાલા વગેરે ડતમ સ્ત્રીએ છે અને નૂપુર પંડિતા, સુરીકાંતા વગેરે અધમ સ્ત્રીએ છે. એવે પુરુષ જાતિ જ એથ છે અને સ્ત્રી જાતિ જ અધમ છે એમ માનવું એ ભૂત છે. વસ્તુતા: પુરુષ જાતિમાં ડતમ, ભધ્યમ અને અધમ જીવો છે અને સ્ત્રી જાતિમાં પણ એ જીવું પ્રકારના જીવો છે. મારે સ્ત્રી ડતમતાની દિષ્ટાએ કોઈ પણ રીતે પુરુષથી ઉત્તરતી નથી. આ રીતે ચતુર્વિધ સંબંધમાં પુરુષના જેઠણું જ સ્ત્રીનું રથાન છે અને એ ચારે સંદેશ વંદનિક, ગૂર્જનિક તથા આરાધના છે.

સ્ત્રી સમાજનું પર્માં શું રથાન છે તેને મારે પુરુષ આં શ્રી. વિજયવદભી સુરિ મહારાજના ડિપ્યુટેન શખ્ષથી ધ્રુવી પ્રકાશ પડે છે.

*
વર્તમાન કણમાં પણ પુરુષ કરતાં સ્ત્રીજાતિમાં વિશેષ સહાયતા હોય એમ માનવાને અનેક પ્રત્યક્ષ પુરાવાએં મળી શકે છે.

દેનદ્શાન સામાધિક, તપસ્યા, વગેરેમાં સેંકડે કેટલા પુરુષ હોય છે અને કેટલી સ્ત્રીએ હોય છે? તે તપાસીએ તો આ કાર્યમાં સ્ત્રીઓની સંખ્યા મોટા આંકડામાં આવશે.

કન્દલ, ચોરી, લૂટકાટ, દગ્ગોરી વગેરે નિકૃષ્ટકાર્યો કરનારામાં સેંકડે કેટલા પુરુષ હોય છે અને કેટલી સ્ત્રીએ હોય છે, તે મારે ક્રાર્ટના દિતર તપાસીએ તો માનુસ પડશે કે આવાં નીચ કાર્યમાં પુરુષોની સંખ્યા વિશેપ છે.

[३८९]

શ્રી જૈન સત્ય અકાશ

[વર્ષ ૩

જળી સમાજ કે ધર્મભાં અશાનિત ડેવલનાર નિહિત તરીકેની ઘ્યાનિ મેળવનાર કે ચોતગોતાનો જુદો ધર્મનો અભાડો જમાવનાર પણ પુરુષાન્તિજ છે ખીએ માનવ સમાજભાં પુરુષાન્તિની પેટે અશાનિત ભયાવી હોય એવાં પ્રમાણે મળવાં મુશ્કેલ છે.

તો પછી ખ્રી આત્મવિકાસમાં પુરુષથી ઉત્તરતી છે એમ કેમ મનાય ?

*

ઉપર દર્શાવેલ ધર્મસ્થાન અને ડેવલનાં ઉત્તમ તથા નીચ કાર્ય કરનારાઓના આંદાજો તપાસ્યા પછી ડોષ મનુષ્ય કલાય એવો પણ મત આંદે કે “ પુરુષો હરેક કાર્યોમાં છેલ્લી સીમાએ પહોંચે છે અને ખીએ ઉત્તમ કાર્યોમાં જ છેલ્લી સીમાએ પહોંચે છે અર્થાતું ખીનું સાહસ પશરય કાર્યોમાં જ વ્યક્ત થાય છે. “ તો તેમાં અનિયતોદિત નેત્રું કશુંય નથી. શ્રી જિનાગમ પણ આ મતને એક અપેક્ષાએ પુષ્ટ જ કરે છે.

જિનાગમમાં એવો રૂપણ ઉલ્લેખ છે કે—પાપી મત્સ્ય મરીને નીચેમાં નીચે જથું તો સાતમી નારકીએ જથું છે અને પુરુષાણી મંજૂ મરીને ઉપરમાં ઉપર જથું તો આદમી હેવલોકથી આગળ જઈ શકતો જ નથી—તે ગ્રેનેયક, અનુનર વિમાન કે મોક્ષમાં જઈ શકતો જ નથી.

ખ્રી માટે આથી ઉલ્લંઘ છે. પાપીણી ખ્રી મરીને નીચેમાં નીચે જથું તો છુટી નરકે જથું છે; સાતમી નારકીએ જઈ શકતી જ નથી અને પવિત્ર સ્ત્રી મરીને ઉપરમાં ઉપર જથું તો નિષ્કર્મ અનીને સિદ્ધશિલામાં— ‘મોક્ષમાં જઈ શકે છે.

ત્રા પરમાધારી અની શકતી નથી, પણ કેવળજાની બની શકે છે. ઉચ્ચે અસુક સ્થળે જનાર જીવને નીચે અસુક સ્થળને જવાનું સામર્થ્ય હોવું જ જોયે, અથવા નીચે અસુક સ્થળને જનાર જીવને ઉચ્ચે અસુક સ્થળને જવાનું સામર્થ્ય હોવું જ જોયે; પુનર્ભવિતાએ આવો ઓકાનિક નિયમ નથી.

આ હરેક વર્ષનું વિવેકપૂર્વક વિચારીએ અને ખોળતિ માટે ગતિ—આગતિ તપાસીએ તો, “ ખ્રી માત્ર અધ્યમત્તાતી અંતિમ સીમાએ કદાપિ જઈ શકતી નથી ” એ વર્ષ બાગયર સુપ્ટ થઈ જથું છે.

વાસ્તવમાં ખીનું શરીર ધર્મસેવન કે મોક્ષપ્રાપ્તિ માટે ડોષ પણ રીતે અચોભ્ય નથી.

“

આજનો વિજાની મનુષ્ય તો ખ્રીમાં નઅત્તા, શાંતિનો પક્ષપાત, સહનશીલતા, સાહસ અને માનસિક વીરતાનાં તરવો પરિણાર રીતે હોવાનું માને છે.

પ્રો. કૃષ્ણપ્રસન્ન ભૂર્ભાએ સને ૧૯૩૮ ના જન્યુઆરીના મોર્નિં રિવ્યુમાં (પૃ. ૨૫) પુરુષ અને ખ્રીના બેદ પર એક લેખ લખ્યો છે. અને અનેક વિજાનોના અનિપ્રાયો આપી આ વર્ષ ઉપર સુંદર પ્રદાશ પાડ્યો છે. તેનો સાર આ પ્રમાણે છે:

ક્રેમ્પાયેલ સાહેય લખે છે કે— ખ્રી બાલકને જન્મ આપે છે સમય સમય પર

* જ્ઞાનો, વાચકવર્ય શ્રી. શ્યામાચાર્યફૂત પન્નવણ્ણ સુત, વા૧૦ શ્રી. હેવાચક ફૂત નની-સુત, હિં૦ આ૧૦ શાકદાયનાચાર્યફૂત ખ્રીસુકિતપ્રકરણ.

[४५६ १०-११]

જનધર્મમાં સ્ત્રી સમાજનું સ્થાન

[૩૮૭]

અતુરંતી બને છે આવી કેલીક નયળાછાંગો સ્ત્રીમાં છે. માતા થવું એ જીવનની ભયાંકર સમરયા છે.

પુરુષ ઉપરનાં કામ કરી શકો નથી.

સેંગિલિક સાહેબ લખે છે કે—સ્ત્રીના દરેક અંગ-ઉપાંગ પુરુષની અપેક્ષાએ જિનના અનાવઠવાળાં છે. સ્ત્રીઓનાં શરીરમાં મધુરતા અને નાત્રતા વિશેષ પ્રમાણમાં છે.

કેલીક શારીરિક તૃઠિઓ ભવે હોય, કિન્તુ વીરતા અને સાહસ તો સ્ત્રીઓમાં હોય છે. સંકટ આપી પડતાં સ્ત્રી દફ રહે છે. પોતાનાં બાળ અચ્છાઓની શરૂઆથી રક્ષા કરે છે. પોતાની આખરને બચાવે છે. આ વીરતા માનસિક છે. નેતે શારીરિક પણ સાથે કરોય સમયનું નથી. યુદ્ધના ક્ષેત્રમાં સ્ત્રી પુરુષના જેણે ઉંચે દરજને જઈ શકતી નથી. તપાસ અને અનુભવથી એ નક્કી છે કે—કેટલાંક કામેને સ્ત્રીઓએ સારી રીતે કરી શકે છે. સ્ત્રીનું મન પુરુષના મનથી જુહું પડે છે કારણે તેને માતા તરીકેનું મોકું કામ કરવું પડે છે. તેઓ શાંતિથી સહન કરી જાણે છે. પોતાનું અલિદાન આપી શકે છે. ને બાઅત માટે પુરુષમાં અયોગ્યતા હોય છે. માતૃત્વ એ તેઓનો સહજ ધર્મ છે. વળેરે વળેરે.

શ્રીમાન પં. કેદારનાથજી ગુપ્ત લખે છે કે—સ્ત્રીઓ શાંતિ સ્થાપનને બહુ આવસ્યક માને છે. સ્ત્રીઓ ધર્મની વ્યવસ્થા સારી રીતે કરી શક છે, તેમ જગતમાં શાંતિ પણ સ્થાપી શકે છે. યુરોપ યુદ્ધની અશાનિતમાં વેચાયું છે, લાંના શાંતિસ્થાપક મંડળમાં મેરી મેરી સ્ત્રીઓ મેન્ફર છે. લાંનની મીસ વાઇટના Women in World History પુસ્તકમાં દુનિયાની મહિલાઓએ શિશી વીરતા અતાવી છે તેને પરિચય મળે છે. વળેરે વળેરે (પૃ. ૭૬), આ વિજાનીઓ પણ સ્ત્રીઓમાં પ્રધાનતાયા ઉપર લઘ્યા પ્રમાણે ઉત્તમ અને શાંત કાર્યોની તમના નિહાળે છે અને અધમ કે શાંતિના વિરોધી યાને અનિતમ અયોગતિમાં લઈ જનાર કાર્યોનો અભાવ બતાવે છે.

અર્થાત—સ્ત્રીનિતિમાં પ્રશસ્ય શાંત કાર્ય કરવાની જેણે તાકાત હોય છે, તેણે અપ્રશસ્ય નિરૂપ્ય કાર્ય કરવાની તાકાત હોતી નથી. કેમકે સ્ત્રી એ મધુરતા, નાત્રતા, શાંતિ અને સાચી (શાંત) વીરતાનું નિવાસસ્થાન છે.

*

આ દરેક પ્રમાણોનું મનન કર્યા પછી વિવેકી મનુષ્ય સહેને સમય શકો કે પુરુષ તથા સ્ત્રી આર્તિમક વિકાસના માર્ગમાં એક સરખી પ્રવાતિ કરી શક છે. અને પોતાના શુભ ધ્યેયને પહોંચ્યા વળે છે જ્યાં આવી સમાનતા છે ત્યાં ધર્મ અને ધર્મકુળ-મેદા માટે અનનેનો સમાન અધિકાર માનવો એટો રહતઃસિદ્ધ વરતુ છે. અને એ કારણે જૈ-જૈનદર્શન પુરુષ તથા સ્ત્રીઓના અંગમાં અને તત્સંબધી અધિકારોમાં માત્ર લેદ માને છે. બાકી પુરુષાં કે સ્ત્રીના આર્તિમક વ્યવસાય કે આર્તિમક વિકાસમાં ફરજ હોય છે, એમ માનવાને સાક્ષ મન્દાર કરે છે.

આ કારણે જૈનદર્શન ધતર દર્શનાથી અધિક આત્માલિમુખી દર્શન છે, અને એ જ સુર આલાપે છે કે સમભાવ ભાવિઅપ્યા લહર્દી મુક્ખ ન સંદેહો ॥

तीर्थस्थानो संबंधी कुटुंड

वेष्टकः—श्रीयुत मोहनवाल दीपचंद योग्यसी

आज अल कोइ रथों जेवा वात सभाय छे के तीर्थस्थगों भाटे रा आइ
मगडा करवाना होय ! ऐने लगता केसो पाण्डा लाण्डा इयामानुं पाण्डी करवाई शुं लाभ ?
हिंगंबर अद्युओ पूजन करे ओमां शुं अगडा जवानु हुं ! पूजन भाटे तकराकरवापाण्
होय ज नहीं. वणी हिंगंबर संप्रहाय अनुसारनां गुहां तीर्थों होवा छतां चणां घरां
रथाने डेवल वडीवटमां भाग पडावानी गृहित्या ज अटका उना करावेला छे. उन्ह्य संप्र-
दायना ए संबंधी अथो वांचवाथी तेमन विधमान परिस्थिति साथे तुलना करवाई ए
वात हीवा जेवा स्पष्ट जखाय तेम छे केटेक वर्ग गरमानी भोजमेंमां द्वाजावाना
स्थगोंमां जय छे ते शांति भेजवाया प्रयास सेवे छे. ए वर्ग आ उत्तान्त वांचवे ते
सहज समझशे के जेन तीर्थोंमा भोटो भाग पडाए उपर आवेलो छे; अटके ऐना शुद्ध
हुवा भाटे शंका धरवापाण् नथी. वणी त्यां जवाथी जे शांति अनुभवाय छे एवा अन्यत्र
लाभवानो संभव नथी. ए हेतु लक्षमां राणी तीर्थस्थगों विषे कुंड़ कुहेवानो आरंभ कर्द छु.

तीर्थी विषे—पर्वीनी भाइक तीर्थी पछु आत्माने प्रगतिना भार्ग आगण
वधवामां सविशेष भद्द ठर्ता छे. “तारे ते तीर्थ” ए व्याख्या तेथी ज यथार्थ छे.
हरेक तीर्थीनी रथापनामां कुंध ने कुंध जुनो छतिहास संकलायदो होय छे. आजनी शोध
के उपलब्ध थतां साधनेथी धर्मांभरां तीर्थीना संबंधमां ए वात पुरवार थाई चूकी छे.
ए संबंधी विरतारथी अवदेकुन करवा भाटे अहीं स्थान नथी, छतां सामान्य स्वप्न
विचारी जवानी लालसाने थोभानी न ज शकाय.

अन्य दर्शनीओनां तीर्थी भाइक जेन तीर्थी आस करीने नहींठांडे के हरियाङ्किनारे
आव्यां नथी. भोटा भाग ए तीर्थी सुषिटीनी सपाटीथी उच्चा वधता प्रदेशमां अटके के
डुंगर के पर्वतो पर रथपायेलां छे. आयी हुनियाना वातावरणुनी के जनतानी धमालनी
असर त्यां पहोची शंकी नथी. आयी ज एवां रथगानुं वातावरणु अधापि पर्वत
शांत ने भोरम रहेल छे. ओमां कुहस्त चेतानो इलो अर्पे छे. अटके जेनतीर्थी निवृतिनां
धाम छे एम कुहीये तो एमां अतिशयेकित नेवुं न गण्याय. रमणीय पर्वत प्रदेशाने
पसंदी आपवामां जेनधर्मना पूरो—गामीओ अलजत दीर्घदर्शिता अने अुद्धि-
क्षेत्राव्यु छे. आभिक उन्नतिना निभित भूत शांति-निवृतिनो सुगोग भेजवाय
उपरांत जगतनो होउधाम अने प्रवृत्तिने दूर इंडी दीधी छे. ए रीते पुहुगलानंहपणुने
अने जउताने अंभेरी नांझी छे एम कुहीये तो आले. ‘अतिपरिच्यादवज्ञा’
नेवो प्रसंग पछु तेथा उपस्थित थतो नथो.

तीर्थस्थापनमां शा शा हेतुओ सभयला छे ए तरक्क जरा दृष्टि इंडी आगण वधीये.
जेनधर्ममां तीर्थकरो ज्यां उपन्या होय, डेवल्य पाम्या होय अने ने स्थाने सिद्धिने
वर्या होय ए सर्व स्थानो तीर्थिप गण्याय छे. ए रीते विचारां तार्थीना संघ्यानो

આંક ૧૦-૧૧]

તીર્થ સ્થાનો સંબંધી કાઈક

[૩૮૯]

આંકડો નિશ્ચિત થઈ જય તેવું છે. પણ આવો એકાંત નિયમ નથી. તીર્થીકરેની નિર્ણયું ભૂમિ જેટનું જ બહુક અધિક મહત્વ સંપ્રાબ્ધ સાહુઓ જે સ્થાને અનશન કરી મોક્ષ સાધી ગયા છે તેને અપાયલું છે. વળી કલ્યાણું ભૂમિનાં કેટલાક તીર્થોનું નામોનિશાન ન હોય છ્ણાં જેકાં ચય નિશી તીર્થીપણું નો કદશ તેમના પર છ્ણી ગયો છે. કેટલાકને તીર્થિત પ્રાપ્ત કરવામાં કુદરત યાને દેશકાળનો સનિયારો મળી ગયો છે, જ્યારે કેટલાક કલ્યાણું ભૂમિઓ તીર્થીપ્રદ હોય છ્ણાં અસ્તોધયના સર્પત વાવાડામાં અથગાઈ ગવાયી આને વિચિછળી જેવી થઈ ચૂકી છે; તેમની માત્ર નામ સ્મરણણ આકૃતિ રહી છે. કેટલાકનાં સ્થાનો પાનાપુરતક સિવાય અન્યત્ર દર્શિયે ચડતાં પણ નથી. આમ તીર્થ સ્થાપનામાં વિવિધતા સમાવેલી છે. તત્ત્વજ્ઞિથી વિચાર કરીયે તો જ્યાં અરિદાંતનું એકાદ્ધ બિંબ પણ વિરાજમાન હોય તે સ્થાન તીર્થીપ્રદ છે. એ રીતે જ્યાં જ્યાં એક અથવા તો એકથી વધારે હેઠાલયો યા જિનાલયો આવેલાં છે એ અંધાં નગરો, ગમો અને પરાંઓ તીર્થીપ્રદ જ છે. એ વધા સંબંધી આપ કહેવાનું ન હોયાથી અહીં તો માત્ર પ્રસિદ્ધ અને મોદાં તીર્થો સંબંધી ઉલ્લેખ કરીશું.

(૧) અધ્યાપદળ—આ તીર્થ હાલ દર્શિગોચર થતું નથી. છ્ણાં ગણ્યું સુનાય અચોદ્યાની સમીપમાં દેખું જોઈએ એની સ્થાપના ભરતચ્કોએ પ્રલુબ શ્રી. નરપાલહેવના નિર્ણયું પઢી કરી હતી. એ ટેકરી કે કુંગરપર આડ મોદા પગથીઆ ચઢ્યા બાદ જવાતું તેથી એનું નામ અધ્યાપદળ પડ્યું. ત્યાં શોભાયમાન મનોહર ચાર દ્વારાણા સિંહનિષના નામના પ્રાસાદમાં એ, ચાર, આડ અને દ્રશ્ય બિંંગેની અનુક્રમે ચાર દ્વારો સામે સ્થાપના કરવામાં આવી હતી. એ બિંંગે પણ અમૃત્ય રત્નોના ભરાવેલાં ને એવી રીતે વિરાજમાન કરેલાં કે ચોવાશ જિનના હેઠ પ્રમાણુંનો જે જિનનતા છે તે જણનીને પણ શિરોમાણ સર્વનો સમકક્ષમાં આવે. શ્રી અધ્યાપહ તીર્થીનું આ સામાન્ય સ્વરૂપ સમજતું. એના પર સ્વરૂપો જનાર અવસ્થ તદ્દનવ મોક્ષગામી આત્મા જ હોય. આવા અતુપમ તીર્થીનું મહાત્મ્ય જ્ઞાનાધ રહે અને ભાવિતામાં આશાનનાનો ચોગ ન સાંપડે એ ભાવનાથી પ્રેરાઈ ભરત રાજની પરંપરામાં કેટલાક કણે થયેલા સગર ચડીના જન્હુકુમાગાહિ સાડ હજર મુત્રોએ હંડ રત્નનંતર તેની ચારે બાજુ મેદી આધ ખાદી અને ગંગાનો પ્રવાહ એમાં વાળી જળથી તેને આકંદ ભરી દીધી. સારથી સામાન્ય જનતા માટે એ તીર્થ અદૃષ્ય થયું, અથવા તો બહુલકર્મા જ્યો હોયાથી અદૃષ્ય થયું.

(૨) શાનુંજથ—આ તીર્થ શાંખતું એટલા માટે ગણ્યાય છે કે તે ભૂત કણે હંડ, વર્તમાનમાં વિવિધાન છે અને આગામી કણે તેનું અસ્તિત્વ કાયમ રહેવાનું છે. જે કે સર્વિષ્ણીના આત્માના પ્રમાણમાં તેની ઉંચાધ વર્ગેરેમાં વધ ધર થતી જ રહે છે તેમજ એનાં નામો પણ જુદાં જુદાં નિભિતથી ધ્યાણાં (૧૦૮) ગણ્યાય છે, છ્ણાં દ્રવ્યથી તેની શાંખતા જળવાધ રહી છે. સર્વ નામોમાં શાનુંજથ નામ સુપ્રસિદ્ધ છે. તે કાહિયાં વાડમાં પાલીતાણ નાણડ આવેલું છે. કે સુધી રેલે ટૈન છે. પાલીતાણ સમીપ પહોંચતાં જ મેઠા મગર જાણે કે સાગરના જળ પર હેઠ પસારી ન એકો હોય એવો શ્યામવણી સિદ્ધાયગાગિરિ શોભા આપે છે. સવા સોમજની કુંક તો જાણે કણા હેઠ પર

શ્વેતવણી મુગટ ન હોય તેમ શોભે છે. આજે પણ આ તીર્થની રમણીયતા જળવાઈ રહી છે. યાત્રાળુંઓના ટેલેટોળાં આડ ભાસ સુધી એની ઉપાસના સાર વકાં આવે છે. જિરિ ઘરનો ભાર્ગ, અંતરણે આવતા વિસામા, ગાળે પડતી ફણેરીઓ અને મનેરમ વાતો વાયુ આજે પણ ભાર્ગ કાપના ચુસાદ્દને આત્મચિંતનમાં ભગ્ન કરી હે છે; સંસારના આધિ, વ્યાધિ ને ઉપાધિ જનિત તાપોને- કલેશને ઘડીભર વીસનાંના હે છે; દાદાના દર્શન માટે અંતરનાં અધૂર્વ વિરોધલાસને અંકૃતિ કરે છે. આ તીર્થના નાયક તરીકે એલે કે સુષ્પ્ય હેવ તરીકે શ્રી આદીબ્રાહ્મ છે, એટું કારણું જે છે કે આ તીર્થ પર તેઓઓ નવાણું પૂર્વનાર પંચારેલા છે, ને વાન આ ભૂમિતું ગૌરવ સૂચ્યવે છે. આકા તેઓઓનું એક પણ કલ્યાણક તેમજ આ ચોનીસીના અન્ય તીર્થકરોસાના ઝાનું પણ એદાહું પણ કલ્યાણક આ સ્થાને નથી થયું. અતાં આ તીર્થનું મહત્વ અનેં છે. તેથી તો તે તાંત્રાધિનાન કલ્યાણખૂબ અનુભા આ સ્થળના સામર્થ્યવાન નથી અન્યું છુંાં આ ભૂમિના વાતાવરણની વિશુદ્ધતા એલો રીતાતીત છે કે એની શાનદાર છાપામાં કાર્યિક આભાઓ કલ્યાણ પથના પથિકો ભની ચુક્યા હોય. એમાં ભાગ ગણુધરો કે સાંદુંઓ જ નહીં પણ આવડો અને સનારીઓ અને તીવી પાપના આચરનારા પાપીઓ પણ સમાઈ જાય છે. તારણું નામની સાર્થકતા આ તીર્થ યથાથ કરી છે, હત્યારા ને ચોરોનાં છબનોની સુધારો આ તીર્થ જેટલો અન્યન નથી થોડો તેથી તો એના કાંકરે કાંકરે સિદ્ધ થયાના યંતોગાન ગવાય છે. ચાવા કલિયુગમાં પણ તે દિનિયા પરતું સિદ્ધક્ષેત્ર છે. આંગલ કેષકો એને ‘મહિરોના નગર’ની ઉપમા આપે છે. એના જેટલાં જિનાબધ્યો ધરાવનાર પર્વત ભાગે જ વિશ્વમાં અન્ય કોઈ લદેશો! દાદાના દરખારમાં પગ મૂક્તાં જ પરિશ્રમ તો પચાયન કરી જાય છે. એ સાથે સસારની ચિત્તા પણ ટળી જાય છે.

વર્તમાન ચોનીસાના આ તીર્થપર સિદ્ધિપદ વરેલા સાધ્યધી પ્રસિદ્ધ નોંધ નાચે સુજાતા સમજવી.

| | |
|--|---|
| ૧ શ્રી. નડગભાઈ પ્રભુના વંશને અસંપ્રાતા | ૧૪ શ્રી. શાતિનાથ પ્રભુ સાંદુના ૧૫૨૮૫૭૭ |
| ૨ શ્રી. પુડરીક ગણુધર પાંચકોડ સાથે | સુનિઓ |
| ૩ દ્રાવિડ વારિભિલ્લ દ્વારા કોડ સાથે | ૧૫ રામ ભરત (દશરથ પુત્રા) નાનું કોડ સાથે |
| ૪ આનિત્યશા (ભરત મહારાજના પુત્ર) એક લાખ | ૧૬ પાંચ પાંડવો, વીશ કોડ સુનિ " |
| ૫ સોમદાચ (બાહુભલિના વડા પુત્ર) તેર કોડ " | ૧૭ વસુહેવની સ્ત્રોઓ પાંત્રીશ હળર |
| ૬ બાહુભલિના પુત્ર એક લનને સાઠ | ૧૮ વૈદળી " ૪૪૦૦ સાથે |
| ૭ નમિ વિનમિ વિદ્યાધરો એ કોડ સાથે | ૧૯ નારહ રત્નિ " એકાણું લાખ " |
| ૮ નમિ વિદ્યાધરની પુત્રી પ્રમુખ ચોસણ | ૨૦ શાંખ પદ્મન સાડાચાઠ કોડ " |
| ૯ સાગરમુનિ એક કોડ સાથે | ૨૧ દ્રભિતારિ ગુરુન ચોદ હળર " |
| ૧૦ ભરત સુનિ પંચ કોડ સાથે | ૨૨ થાવચ્યા પુત્ર એક હળર " |
| ૧૧ અન્નિતસેન સતત કોડ , | ૨૩ શુક પરિવારક (યુદ્ધાચાર્ય) એક હળર " |
| ૧૨ અન્નિતનાથ પ્રભુના સાંદુંઓ દશ હળર | ૨૪ સેલગાચાર્ય પાંચસો સાંદુ " |
| ૧૩ શ્રીસાર સુનિ એક કોડ સાથે | ૨૫ સુભદ્ર સુનિ સાતસો સાંદુ " |
| | ૨૬ કાલિક સુનિ એક હળર " |

આંક ૨૦-૨૧.]

તીર્થસ્થાનો સંબંધી કંઈક

[૩૬૭]

આ સિવાય હેવડીજના જ પુત્રો, જલ્દી ભયાલી ને ડિપ્યાલી (યાદ્વ પુત્રો) સુવત શેડ, મંડસુનિ, સુકોશદમ્ભુનિ, અયમતા મનિ તેમજ ચંદ્રશેખર પ્રમુખ હોષિત આત્માઓ આ પરિવ તીર્થધર નિદ્રિ વર્ણી છે. એના પ્રત્યેક ૨૪૪૪માં પવિત્રતા ને શુદ્ધતા ભરેલી છે એમ કાઢીએ તો અર્તિશયોક્તિ નાનું નથી. આજે પણ લાં પરિણામ વિશુદ્ધતા વિશેષ વર્તે છે.

આ તીર્થના મોયા ઉદ્ઘાર સોળા થયા છે જે નીચે પ્રમાણે:-

૧. ભરત ચંદ્રતાંદે શ્રી નામિ ગણુધરની સાથે આવી કરાયો.
૨. ભરતની આહુમી પાટે થગેલા દંડવીઠે ભૂપાળે કરાવ્યો.
૩. રીમંમર નિનના ડિપદેશથી મશાનેને કરાવ્યો.
૪. ચોથા હેવડીજના સ્વામી આહેને કરાવ્યો.
૫. પાંચમ હેવડીજના સ્વામી અક્ષેને કરાવ્યો.
૬. ભુવનાપતિના મંડ અમરેને કરાવ્યો.
૭. અગ્રિતનાથ સ્વામીના બંધુ સગર ચંડીએ કરાવ્યો.
૮. અમિનાન સ્વામીના ડિપદેશથી બ્યારેદોએ કરાવ્યો.
૯. ચંદ્રપ્રભુના શાસનમાં ચંદ્રશેખર મુનિના ડિપદેશથી તેમના પુત્ર ચંદ્રશાંદે કરાવ્યો.
૧૦. શ્રી શાન્તિનાથજીના પુત્ર ચંડાયુદ્ધજીએ પ્રભુની દેશના સાંભળી કરાવ્યો.
૧૧. શ્રી મુનિસુવત સ્વામીના શાસનમાં ગમચંદ્રજીએ કરાવ્યો.
૧૨. શ્રી નેમિનાથજીના ડિપદેશથી પાંડવોએ હેવ સહાયથી કરાવ્યો.
૧૩. જાવડશા ગેડે વજસ્વામીની સહાયથી સંવન ૧૦૮ માં કરાવ્યો.
૧૪. શ્રી કુમારપાળ ગાલના સમયમાં આલડ મંત્રીએ ૧૨૧૩ માં કરાવ્યો.
૧૫. સમરાતા ગ્રેશવાળે સંવન ૧૩૭૭ માં કરાવ્યો.
૧૬. કરમાશા ગેડે સ. ૧૫૮૩ માં કરાવ્યો.

પવિત્ર વસ્તુએ।—(૧) રાજની (રાયણ વક્ષ) અને તેની નીચે રહેલાં પ્રભુના અરણુ. આ રાયણ વક્ષ શ્રી નાત્યભદ્રેવ ભગવાનની પાદકાને લઘ પવિત્ર ગણ્યાય છે. પ્રભુશ્રી અનેક વષણ આવીને એની નીચે સમવર્શાર્થી છે. તે પર હેવવાસ મનાય છે અને પૂર્ણ ભક્તિનાવર્થી તેની પત્રકણા દેંાં જે તેમાંથી દુધ વર્ષે છે તો ઉભય કોડમાં સુખ પ્રાપ્તિ થાય છે. એની પવિત્ર દિશા તરફ એક દુર્બલ રસકુપિકા છે. એના રસથી લોહ સુવણ્ણુનાને પાણ કરે છે. હજ તો એ અદૃશ્ય છે. (૨) શત્રુંજય નહી પર્વત શત્રુંજયની સમાપ્તમાં જ રક્ષણ અનુષ્ઠાને પ્રભાવિક રજણથી પૂર્ણ સર્વારે વહી રહી છે. તેનું જાણ સતતું વહેનું હોય છે. તેમાં વિરેક્ષિ રનાન કરનારનું સર્વલ પાપ દોચામ જય છે. (૩) સર્વાંકં. આ કંડળ પાણી પવિત્ર અને રાનિવાંક મનય છે ભૂનક્ષે એના

[३६२]

શ્રી જૈન સત્ય અકાશ

[વર્ષ ૩]

પ્રભાવથી ડોડીઓના કોઠ ફૂર થયા છે, અને ચંદ્રાળનું કુડાપણું નએ થયું છે. આ સર્વ આખતો શ્રદ્ધેય છે કેમક યાકીન (અદ્દા) મોટી ચીજ છે આ ઉપરાંત ચિલ્દાણ તલાવડી પણ એક મહાત્મ્યવાળી જગ્યા છે. સંધના માનવીઓની તીવ્ર રૂપા રૂપવા માટે ચિલ્દાણ (સુધર્મગણુભરના શિય) નામના શક્તિવંત સાધુઓએ માત્ર પાત્રમાં રહેલ અથવ જળમાંથી પ્રગટાને એક સુંદર સરોવર અને એ સાથે સંધ પર્યે એક લાગીના હંદ્યમાં જળકી રહેલ અપૂર્વ બાળનું આ દર્શન થાય છે. તે સ્થળનું જળ પવિત્ર ગણાય છે. આ સિવાય આ તીર્થને ઇરતી દોદ ગાડીની, જ ગાડીની અને બાર ગાડીની પ્રદક્ષિણા દેવામાં આવે છે. એ વેળા હસણગિરિ અને હંદનગિરિ નામના નાનાશા કુંગર નિરખવાનો ચોગ સાંપડે છે.

મૂળનાયક શ્રી. આહિનાથના મનોહર દેવાલયને ઇરતા ચોતસ્ક નાનાં મોટાં મંહિરોની સુંદરશૈલી શોભી રહી છે. વળી હાથીપોળની અદાર પણ દ્રહેરાંની સંખ્યા વિપુલપણે દર્શિ ગોચર થાય છે. આ સિવાય મોતીશા શેઠની વિશાળ કુંક અને એ સિવાય બીજી પણ નાની મોટી કુંક દાદાની મોટી કુંકની સાભી બાળનું આવી રહેલ છે. એમાં ચોમુખજીની કુંક અતિશય ઉંચી હોંઘ સૌ કોશનું ચિત્ત આડરો છે. વળી ધોણીપાગ એ શરુંજ્યપર આવાના બીજી માર્ગરૂપ છે. ત્યાં પ્રલુબીની પાદું હોય છે. આમ જે તીર્થધિરાજની પવિત્રના અને માદાત્મ્ય સંબંધે સંખ્યાએ પાનાઓમાં સુવર્ણાકૃષે વિવિધવર્ણી નોંધા આજે પણ નયનપથમાં આવે તેમ છે તે વિષે આ સ્થાને ડેટલો વિરતાર ફરી શકાય ! કુંકમાં એટલું જ કહેલું કારી છે કે આજે પણ આ તીર્થ શાશ્વતતાના અનુપમ નમૂનારૂપ હોંઘ એક વર અવસ્થ દર્શન કરવા ચોય છે. જાત અતુભવ એજ સારામાં સારું પ્રેમાણ પત્ર છે.

(3) રૈવતાચળ યાને ગિરનાર તીર્થ—કાદ્ધિયાડામાં આવેલ આ બીજું મહાન તીર્થ છે. જીનાગદ સુધી રેલ્વે ટ્રેનમાં જવાય છે, ત્યાંથી ગિરનાર પહાડ યોડો ફૂર છે. પગે ચાલતા કિંવા દોગગાડી વગેરેના સાધનથી એની તલેટીમાં પહોંચી શકાય છે. આએ પહાડ વાટળ સાથે વાતો કરતો ન હોય એવો પ્રથમ દર્શને દેખાય છે. શ્રી. નેભિ નાથના મંહિર સુધી પગથીઓ બાંધેલા છે. આ પહાડપર નૈનેતર મંહિરો પણ આવેલાં છે તેમજ બાવા સંન્યાસીઓ રહે છે ને ઉપર ખાય છે પીએ છે. આ પહાડ ઉપર ખાવા પીવાનો પ્રતિઅંધ જેનોમાં પણ શ્રી. શરુંજ્ય નેટલો નથી.

(ચાલુ)

પરમાર્હત મહાકવિ શ્રી ધનપાલનું આદર્શ જીવન

લેખક:—સુનિશાજ શ્રી સુશીલવિજયજી

(ગતાંકશ્રી ચાલુ)

કવિના સમયની નગરીની અપૂર્વતા

એ સમયની નગરીનું વર્ષન વાંચતાં અનાદ આનંદ થાય છે. એ વર્જન વાંચતાં પૂર્વકાલીન નગરીઓની ભવ્યતા અને વિશાળતાનો એક મહાન નભુનો વાચકવર્ગની દર્શી આગણ અડો થાય છે.

ધારાનગરીમાં ચારે તરફ વિજ્યપતાકાઓ કુરકી રહી હતી. દામડાન જિલ્લમહિરોના શિખરો નણે ગગન-મંજુલને બેઠી પડ્યાં ન હોય, તેમજ સ્વર્ગભૂવનમાં રહેલા પોતાના સ્વજનતિય મહિરોના શિખરોને મળતાં ન હોય, તેમ શોભા રહ્યાં હતાં. સત્પુરુષોનાં-સાધુ માહાત્માઓનાં આવાયમનો નિશાનિ થઈ રહ્યાં હતાં. એ સમયની ધારાનગરીની ભવ્યતા-વિશાળતા અપૂર્વ હતી. ભારતભૂમિની એક સુંદર અને સમૃદ્ધ નગરી તરીકેની તેની કાર્તિક હતી. પ્રજના સંસ્કૃત્ય માટે ચારે તરફ મજાયુત કિલ્લો હતો. તેમાં આવેલા અહિભૂત આવાસો, તેના નંદનવન સમાન સુંદર બાગ અગીયાઓ, નાની નાની વાડીઓ, રાજમહેલો, મોટા મોટા દરવાનાઓ, બજરોનો વૈભવ-ડાડમાડ, આ અધુ અપૂર્વ હતું. તેમાં શ્રીમંતો, યોગીઓ, સાધુસંતો, બાવાઓ, આત્મભયાની પુરુષો, પ્રજનનો સુખપૂર્વક વસ્તા હતા. વિશ્રાંતિગૃહો, પૌષ્ણશાળાઓ, પાદશાળાઓ, રમવાના સ્થાનકો, જીનલંડારો વગેરે વગેરે અનેક વસ્તુઓથી અલંકૃત એ નગરી છન્દ્રપુરી મઝી રોભતી હતી.

૪ યતના પૂર્વક સમયકૃતવનું પાલન

આવી અનોહર નગરીમાં ધનપાલ હિવસે હિવસે અપૂર્વ વિદ્ધતાથી, અલીકિક કવિત્વ શક્તિથી, રાજના સતકાર્થી, ધર્મની અદ્ધાર્થી, પોતાના શેને ચારે તરફ ડેલાતી રહ્યો હતો. તેના હૃદ્યકમલમાં સમ્યકૃત સૂર્યનાં કિરણો ઝગમગી રહ્યાં હતાં. તેના પ્રત્યેક રવાંયાં અપૂર્વ તેજ વ્યાપી રહ્યું હતું. તેના હૃદ્યમાં હ્યાનાં નિર્મળ ઝરણુંઓ વહી રહ્યાં હતાં. તે બાર વતનું પાલન કરી રહ્યો હતો. નિરંતર ૪ યતના પૂર્વક ધર્મનું આરાધન, જિનેશ્વર પ્રભુની પૂજા, પ્રભાવના વગેરે અનેક કાર્યોથી પરિવર્તણો ધનપાલ અહનિશ આનંદની છોણો ઉછળણી રહ્યો હતો. ૪ યતનાનું પાલન કેવી રીતે કર્યું છે, તેનું યતકિચિત સ્વર્ણપ પ્રદર્શિત કરવામાં આવે છે.

૧. વંહન નામની, ૨. શાર્ધનમાવાની, ૩. ગૌરવ અકિત નામની, ૪. અનુ-પ્રદાન નામની, ૫. આલાપ નામની અને ૬. સંલાપ નામની; આ પ્રમાણે ૪ યતનાઓ સમજવી.

પરતીર્થી—એટલે સંન્યાસી, પરિપ્રાજ્ઞક, બિલ્લુક, તાપસ અને આનંદથી વગેરે લૌકિક ગુરુઓને, તથા શિવ, શંકર, અહા, વિષણુ, બૌધ્ધ, ચૈગમણર, વગેરે અન્ય દૈવાને, વળી અન્યમતાતુયાયીએ પોતાના દેવ તરીકે અઙુગીકાર કરેલ જિનપ્રતિમાને, તેમનાં નામોમાં ફેરદારી કરી પોતાના સ્થાનમાં સ્થાપન કરેલ હોય તેમને, સમ્યગ-

[३६४]

श्री जैन सत्य अकाश

[वर्ष ३

दृष्टि प्राणिओंचे वंदन वर्गेरे न करुन्, तेनुं नाम प्रथम यतना क्लेवाय छे. पांचांग प्रणिपात, शिर नमाववुं, गुण गान करुन् वर्गेरेथी विभुष रहेवुं ते भीज्ञ यतना क्लेवाय छे. जिनेक्षर प्रभुना शासने अङ्गीकार करनार, वार वर्त स्वीकारनार, सम्प्रक्तवशालि अ॒य प्राणि प्राणांतना आगे पणु असत्त्व कळोता अहन करवा कळुल करे, पणु प्रथम यतना अने भीज्ञ यतनामां देशभाव पणु होय न लगाडे.

उपर अतावेला परतीर्थी अने अन्य हेवाने मळृष्ट द्वान आपवुं, भक्ति अहुमान करुन्, ते सम्प्रक्तवशालि ने कळेपे (अर्थात् कुटेव, कुगुरने वंदन-नमस्कारादिके करवां नडी), आनुं नाम गौरव भक्ति नामनी वीज्ञ यतना क्लेवाय छे. चोथी जयण्णा अनुप्रदान (वारंवार द्वान आपवुं) ते परतीर्थीओंने अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तथा वस्त्र, पात्राहि सुपात्र समज्ञने आपवां नडी. अर्थात् सुपात्रनी झुळिओ आपवा ज्ञां अन्य दोषना जेवामां आवे तो तेमनुं बहुमान थाय, अने तेथी भिथ्यात्वनी पुण्ठि थाय छे. अर्थात् त्यां अनुकंपा मानवी, कारणु के अनुकंपा तो हीन हळःधीने विषे लोय छे.

परतीर्थीओंचे प्रथम ऐलाव्या विना तेमनी साये आलाप न करवा ते पांचांग यतना क्लेवाय छे. सम्प्रदृष्टि ज्ञानोंचे तेवा आलापने सर्वथा त्याग करवा जेईचे.

उपर अतावेला परतीर्थीओंनी साये विशेष संलाप एटेवे वगर ऐलावे वारंवार आलाप करवा ते अडी यतना क्लेवाय छे. कलाय परतीर्थी प्रथम ऐलावे, छतां पणु दोक्षपवाहना भयथी तेनी साये अहु ज अल्प ऐलावुं.

आ उपर्युक्त ज यतनार्थी सम्प्रक्तवगुणु तथा शुभ न्यवलार होये छे. तेमां पणु हेवयुक्त आदिक्नी भक्ति, शासननी प्रभावना, ज्ञानादिक्ना लाभ वर्गेरे अनेक कारणाने अवलंभाने तेने विषे जयण्णा ज्ञानी भगवतोंचे प्रज्ञेली छे. तेना अनेक प्रकारो सिद्धान्तेनी अंदर अतावेला छे. अडी तेनुं सामान्य स्वरूप ज अतावेल छे.

१. न्यायाचार्य, न्याविशारद, अनेकांथप्रणेता, श्रीमान् उपाध्यायज्ञ यशोविजयज्ञ भलाराने अतावेल सम्प्रक्ति सकस्त ऐलनी नवमी दाणमां आमेडुख चीतार अ.पेक्षा छे, जे नीचे प्रभाषे :—

परतीर्थी परना सुर तेणु, चेत्य अज्ञां वणी नेह;

वंदन प्रमुख तिळां नवि करुन्, ते जयण्णा पट लेयरे; भविका, सम्प्रक्तियतना कीजे. (४५)

(१) वंदन ते करयोजन कळिओ, (२) नमन ते शीश नमावे;

द्वान मळृष्ट अन्नादिक देवुं, (३) गौरव भगति देखावे रे भ० (४६)

(४) अनुप्रदान ते तेहने कळिओ, वारवार जे द्वान;

द्वाय कुपाने पात्रमतिओ, नडी अनुकंपा मान रे भ० (४७)

(५) अलु ऐलावे जेह ऐलवुं, ते कळिओ आलाप;

(६) वारवार आलाप जे करवा, ते जाणो संलाप रे भ० (४८)

ऐ जयण्णाथी सम्प्रक्ति दीपे, वली द्वापे व्यवहार;

ऐमां पणु कारणण्णाथी जयण्णा, तेहना अनेक प्रकार रे भ० (४९)

આંક ૧૦-૧૧]

શ્રી ધનપાતું આદર્શ જીવન

[૩૬૫]

ઉપર અતાવેલ છ યતનાનું નિશચિન આરાધન કરતો ધનપાત વિકાલ પૂજન, યુદ્ધભક્તિ તથા સુપાત્રમાં હાન આપવા વગેરે અનેક કાર્યોમાં ઉવભાગ રહેતો હતો. અને પોતે કરેલા નિધમભાં કોઈ પણ જાતનો મિથ્યાત્વનો ભાંગો ન લાગે, તેને માટે વારંવાર સંભાળ પૂર્વક રહેતો.

મહાવીરહેવના મંહિરમાં

દ્વિસે દ્વિસે ધારાનગરીની શોભા ધર્ણી જ વધતી હતી. વર્ષાઋતુનો પ્રારંભ કાલ ચાલી રહ્યો હતો. ગગનમણુલમાં કાળાં વાદળાં ચારે તરફ દોડધામ મચાવી રહ્યાં હતાં. અરમર અરમર મેઘ વર્પતો હતો. નાના તળાવો—ખાસેચ્ચાઓં જાણે સમુદ્ર ન અની ગયાં હોય તેમ ભાસતાં હતાં. પાણીની રેલમ છેલેમ ઉછળા રહી હતી. વૃક્ષો, છેડવાએ, વેલાએ, અને અનેક જાતની વનસ્પતિથી ભરપૂર પૃથ્વીમાતાએ જાણે લીલા રંગની સાડી ન પંડી હોય તેમ ભાસતી હતી. મધ્યર અને અચૈધાએ આનંદની છોગે. ઉછળા રહ્યાં હતાં. ઝડૂત વર્ગ અત્યંત હપ્તિન થઈ ગયો હતો. ધારાનગરીના કોડો ગોખરમાં, પોતપોતાના રથાનમાં એસીને પ્રકૃતિનું સુંદર દશ્ય જોવામાં તહીન થઈ ગયાં હતાં.

આ જમયે પરમાર્થિત કવિ ધનપાત ચરમ તીર્થડકર અમણું ભગવાન મહાવીરના મંહિરમાં મધ્યાન્દ પૂજન કરતો હતો. પ્રભુના મંદીરમાં પૂતના દીપકો અશુભ પરમાણૂને શુદ્ધ કરી રહ્યાં હતાં, યુષ્ણોદાર દુપત્તી સુવાસ સમસ્ત દેવાલયમાં ઇલાઈ રહી હતી. ધનપાત પ્રભુ મહાવીરની મૂર્તિનું અપૂર્વ અર્થન (પૂજન) કરી રહેલા હતો. તેતું સમસ્ત શરીર પરમાત્માની ભક્તિથી પુલકિત થયું હતું. તેનું ચંદ્ર સમાન ઉજાવલ મુખાર્વિન્દ આનંદના અતિરેકથી અત્યંત મનોહર લાગતું હતું. પૂજનું કાર્ય સંપૂર્ણ થયા આહ ધનપાત મનોહર કંઠથી સુંદર આલાપથી, સંસ્કૃત શ્લોકાનાં ગાનથી રહુત કરવા લાગ્યો. તે નીચે પ્રમાણે:-

બલं જગદ્યિસનરક્ષણકર્મ,
ક્ષમા ચ કિં સંગમકે કૃતાગમિ ॥
ઇતીવ સંચિત્ય વિમુખ્યમાનસं,
રૂષેવરોષસ્તવ નાથ નિર્યયૌ ॥ ૧૧૩ ॥
કતિપયપુરસ્વામી કાયવ્યયૈરપિ દુર્ગ્રહો,
મિતવિતરિતા મોહેનાસૌ પુરાનુસ્તો મયા ॥
ત્રિભુવનવિમુદ્રદ્વા (વ્યા) રાધ્યોઽધુના સુપદપ્રદઃ,
પ્રમુરપિ ગતસ્તવત્પ્રાચીનો દુનોતિ દિનવ્યય: ॥ ૧૧૪ ॥

[પ્ર૦ મ૦ પ્ર૦-પૂર્ણ ૨૩૧]

અર્થ:—હું નાથ ! તારું અદ્ય જગતનો વિધાત (સંહાર) કે રક્ષણ કરવામાં

૧ તત : શ્રોમનમહાવીરચैત્ય ગતવા નનામ ચ ।

વીતરાગનમસ્કારં શ્લોકયુગ્મેન સોડવીત ॥ ૧૧૨ ॥ પ્ર૦ મ૦ પ્ર૦

समर्थ छे, छतां पण आपे अपराधी संगम ने हेव पर क्षमा उम करी ? ” एवे प्रभाण्डु चींतनीने ज जाणे रोप पाम्ये। होय तेम विमुख मन करीने तमारे रोप चाल्ये गये।

केटलाक नगरना स्वामी (राजा) नेह्या परिभित दृष्ट्य आपनारा होय छे, तेह्योनी अत्यार सुंधी में मोहने वश थर्छ ने शरीरना भोगे पण साधी न शकाय, ऐंदी धर्मी सेवा करी। हवे आजे युद्ध भानथी आराधि शकाय एवा आप निनुवनपति एवा हे भगवन्, भक्तिपूर्वक आपनी आराधना करवी छे। आपने प्राप्त करी हरेक धृष्ट प्राप्त करी शकुं तेवी शक्तिवाणी थेयो छुं। पण पूर्व ने हिसो व्यतीत थाने काण व्यर्थ गयो। ते हृष्ट्यमां सादे छे।”

(अपूर्ण)

१. आनु आष्टु वर्षुन परमार्थत कवि स्वयं तिलकमंजरीना भंगलायरण्मां छडा श्वेकनी अहर प्रतिपादन करे छे। गुआ—

रक्षन्तु स्वलितोपसर्गगलितप्रौढप्रतिज्ञाविधौ,
याति स्वाश्रयमजितांहसि सुरे निश्वस्य सञ्चारिताः ॥

आजानुक्षितिमध्यमग्नवपुषश्चाभिघातव्यथा—

मूच्छन्ते करुणाभराश्वितपुटा वीरस्य वो दृष्टयः ॥ ६ ॥ तिलकमञ्जरी ॥

भावार्थ :—यस्मीन्थुक्तर अमणु भगवान् भहावीर परमाभाने संगम नामना अवम हेवे असत्त्व हुँयो। दीधां, के ने जांभानातां हरेक प्राणीना अंतरमां अनहट हुःभ उहभवे छे, अन्य छे ए भहर्मिने के नेह्ये अन्य ध्याननी धारा लगावी ए हुँयो। सहन कठी, एटलुं ज नहीं पण शत्रु प्रत्ये क्षमानी नहींयो। वहेती मूँड।

संगमहेवे प्रभुपर चारे हिंसाओमां धुमावीने, प्रभुने ध्यानथी चलित करवाने भाए, कालयक इक्कुं हतुं। ए वज्ञनु सदस्य भार प्रभाणु वज्ञन हतुं। तेने हजरै तीक्ष्ण धाराओ हती। अने ते सूर्यना तेजनी नेम उगमगी रह्युं हतुं। ते जे कहाय सुवर्णभय भेइ पर्वतनी चुलीका उपर मुक्त्यामां आवे तोपण तेना चूरेचूरा करी नाए, तो पछी मानवना प्राण्यो संहार करे एमां तो। पूछ्युं ज हुँ ? गगन भंडवामां चारे तरह ते कालयकने धुमावी धुमावीने ध्यानस्थ रहेता अमणु भगवान् भहावीर उपर इक्कुं। प्रभुना पुण्यप्रक्षेपने लहनी, ते कालयक प्रभुने नेम प्रहसिष्या हाते भूमण्डलमां चेसी गयुं। प्रभु भहावीर पण अभिधातथी ठीचणु सुधी जमानामां खुँचा गया। आथी प्रभुने अत्यंत वेहना थर्छ, एटलुं ज नहिं पण मूर्छानां औलाओ आवी गयां। प्रभुनु वज्ञनप्रब संधयणु शरीर होवाथी एत्याथी ज सर्वुं। आ जग्याए जे अन्य ढार्ह होत तो जहर यमना धामामां विद्युपगीरी लहि लीधी होत। वाच्यक्यर्गने कहाय प्रश्न थाय के प्रभु भहावीरने संगम नामना अवम शत्रुये धनवेव उपसर्गी कठी, छतां पण लेश भान शिक्षा न करी, तेथी शुं प्रभु सामर्थ्यहीन हता ? तेना प्रत्युतरमां कवि धनपाल तिलकमंजरीना भंगलायरण्मां स्वयं जर्णावे छ “ ने हवे धन्दसभामां लाभ प्रतिज्ञा करी हती के गमे ते भोगे हमणां ज हुं जमने प्रभुने चलायभान करीने पाणो आहुं छुं। आवी प्रतिज्ञाथी निष्ठल निवडी, तेमज धणां पापो उपाज्जने ढरी पोताना स्थानमां ते चाल्यो गयो। एवा उपर पण ने भगवान् भहावीरने मूर्छा दूर थेये द्यानी जागरुक्यो थर्छ ते भहावीर हेवनां कृष्णपूर्ण नेत्रो तमाङ्ग रक्षणु करो !

श्री जैन सत्य प्रकाशनो

भीजे विशेषांक

[श्री पर्युषणा पर्व विशेषांकनी योजना]

“ श्री जैन सत्य प्रकाश ” तुं ब्रीजुं वर्ष, आवता जुलाई महिनाना अंक साथे पूर्ण थतां, चाथा वर्षनो ग्रथम अंक विशेष अंक तरीके प्रगट करवानुं नडी करवामां आव्युं छे. मासिकना नवा वर्षनो प्रारंभ श्रावण मासमां थतो ह्यावाथी आ विशेष अंकने “ श्री पर्युषणा पर्व विशेषांक ” तुं नाम आपवामां आव्युं छे, अने आ अंक नीयेनी योजना प्रमाणे तैयार करवामां आवशे:-

परमात्मा भडावीर हेवना निर्वीणु पठी ६८० वर्षे वदलायुरमां श्री हेवद्विंगणी क्षमाश्रमणे जैन आगमाने पुस्तकाइठ कुर्या अने ६८८ वर्षे आनंदपुरनी राजसभामां श्री हेवद्विंगणी क्षमाश्रमणे श्री कटप्रसूतनुं जल्हेर प्रवचन कुर्या. आ प्रमाणे भगवान भडावीरस्वामी अने श्री हेवद्विंगणी क्षमाश्रमणे वच्ये लगभग एक हजार वर्षनुं अंतर छे.

प्रस्तुत विशेषांकमां श्रवतांभर संप्रदायने लगता, ए लगभग एक हजार वर्षना गाणाना धतिहास उपर प्रकाश पाडे तेवा देखो आपवामां आवशे. वीरनिर्वीणु पठीना एक हजार वर्षना धतिहास उपर प्रकाश पाडे एवां साधनो आपणी पासे एाछां छे, ज्यारे लीलु तरइ ए एक हजार वर्षनो काण जैनो भाटे अति भडत्वनो छे; एट्के ओउ ध्येये अशो पछु ए समयने लगती सामणी पूरी पाठी शकाय अने एक माटी आमीने कंधक अशो द्वार करी शकाय ए धरिहाथी आ विशेषांकनी योजना तैयार करवामां आवी छे.

आ योजना प्रमाणे ए एक हजार वर्षना गाणाने लगता अनेक विषयो उपर देखो तैयार थइ शके एम छे. आस करीने धतिहास, साहित्य कणा अने शिव्य-स्थापत्यना विषयो संबंधी देखो भणे तो ते विद्वानोने अहु उपयोगी नीवडे.

धतिहास—आ विभागमां ते अरसामां थइ गयेदा भडान धर्म-शुरुओ—जैनाचार्यो, जैन साधीओ, शुरुपटपरंपरा, गच्छा, जैन राज्यो, जैन राजवंशो, जैन मंत्रीओ, श्रावको, श्राविकाओनां प्रमाणुभूत लुवन-चरित्रोनो तेमज ते काणनी राजनैतिक, सामाजिक उ धार्मिक विशिष्य औतिहासिक घटनाओनो समावेश थइ शके.

साहित्य—आ विलागमां ववलीवाचनातुं औतिहासिक वर्णन, ए एक हजार वर्षमां रथयेव आगम साहित्य, आगमने लगतुं—आगमो उपर प्रकाश पाडतुं (टीका वगेरे दृप) भीन्नुं साहित्य, संस्कृत प्राकृत भाषामां रथयेवा भीन अनेक विषयोना नाना भाषा व्रंथो, ए व्रंथकारोनां ज्ञवन् चरित्रो, जन लीपीनो विकास, ते वर्खतनी पठन—पाठन शैली तेमज ए एक हजार वर्षना धितिहास उपर प्रकाश पाडता व्रंथोनो परिचय वगेरे विषयोनो समावेश थह शके.

कुणा—ते वर्खतनी जैन कुणातुं स्वदृप, तेनो प्रभाव अने विकास तेमज तेनुं वैशिष्ट्य.

शिवप स्थापत्य—ए वर्खतमां स्थापन थयेलां जैन तीर्थो, हेरासरो, अन्य धर्मस्थानडे तेमज तेना स्थापडेने लगती हकीकत; ए समय उपर प्रकाश पाडता शिवालेखो; त्यारना जैना स्थापत्यनी विशेषता तेमज ए स्थापत्य अने वर्तमान स्थापत्यनी तुलना वगेरे विषयोनो आ विलागमां समावेश थाय छे.

आ समयां थयेलां तीर्थो, हेरासरो, शिवालेखो, हस्तलिखित व्रंथो डे भीलु कोइ भाषतोनां चित्रो अमने भण्शो तो तेने प्रगट करवा माटे योग्य व्यवस्था करवामां आवशो.

आ विशेषांक वधुमां वधु उपयोगी अने ए रीते अमे आ योजना तैयार करी छे, अने एने हरेक रीते समृद्ध भनाववानी अमारी उमेह छे. अमारी आ उमेहनी सङ्कृतानो अधो आधार पूज्य मुनिराजे अने अन्य विद्वानो तरक्ष्य भणनार लेख सामग्री उपर छे ए क्लेवानी भाष्ये ज जडू छे.

आथी अमे सौ पूज्य मुनिमहाराजोने तथा अन्य विद्वानोने जाहर विनांती करीए छीए के तेओ उपरना विषयोने लगता, भनी शके तेटला वधु, लेखो भाक्तीने अमारा आ प्रयत्नने सङ्कृत भनाववामां सङ्कृताता करे !

—व्यवस्थापक.

लेखो वगेरे नीचेना सरनामे भोक्तवां—

व्यवस्थापक, श्री जैनधर्म सत्यप्रकाशक समिति
लेशिंगबाईनी वाडी, धीकंदा. अमरावाड

સ-મા-ચા-ર



अतिथा-(१) कहनशिरेमां वैयाख सु. ७ अंगलशक्ताका तथा १० प्रतिष्ठा थई. ५. आ. निजयनेमि सूरीश्वरज्ञ आहि त्यां पद्मार्थी हुता. (२) मेरठमां वैशभ सु १० प्रतिष्ठा थई. ५ सु. हसोनविजयज्ञ आहि त्यां पद्मार्थी हुता. (३) पाटीमां वैशाख सु. ६ ५. आ. निजयदानसूरीश्वरज्ञ मुर्ते तथा पहुळापि प्रतिष्ठा थई. ५. आ. निजयविजयसूरीश्वरज्ञ आहि त्यां पद्मार्थी हुता. (४) सउरातमां वैशभ सु ६ प्रतिष्ठा थई. ५ ५ छिंमतविजयज्ञ आहि त्यां पद्मार्थी हुता. (५) हातर (मुंख) मां वैशाख सु. ६ प्रतिष्ठा थई. ५. ५. इक्कि सुनिल त्यां पद्मार्थी हुता. [६] आणेगांभमां वैशाख सु. १० प्रतिष्ठा थई. ५. ५ सु. कैवल्यविजयज्ञ आहि त्यां पद्मार्थी हुता. (७) अवसर [मतगार] मां लेड सु ३ प्रतिष्ठा थई. (८) चवेलीमां वैशभ १ ६ प्रतिष्ठा थई. ५. आ. निजयद्विमुःसूरिज्ञ आहि त्यां पद्मार्थी हुता. (९) तणानमां वैशाख सु. ६ प्रतिष्ठा थई. ५. सु. नंहनविजयज्ञ आहि त्यां पद्मार्थी हुता. (१०) राघनपुरमां वैशाख सु. ६ प्रतिष्ठा थई. ५. आ. निजयमदसूरिज्ञ तथा ५. आ. निजय-लक्ष्मणसूरिज्ञ आहि त्यां पद्मार्थी हुता. [११] घेरल्लमां वैशाख सु. ६ प्रतिष्ठा थई. ५. सु. प्रीतनिजयज्ञ आहि त्यां पद्मार्थी हुता. [१२] हीमोहरमां वैशाख सु. ६ प्रतिष्ठा थई. ५. ५. चरणविजयज्ञ आहि त्यां पद्मार्थी हुता. [१३] कुत्ताल्लमां ता. १२-५-३८ प्रतिष्ठा थई. ५. ५. ५. कैवल्यविजयज्ञ आहि त्यां पद्मार्थी हुता. [१४] हुरल्लमां लेड सु. १४ प्रतिष्ठा थई.

दीक्षा-[१]-सभीनिव.सी भाष्म मंगलदास रत्नचंडे सभीमां वैशाख सु. ६ ना हिवसे ५. ५. शीर्तिसागरज्ञ भासे तेमां शिष्य तरीके दीक्षा लीधी. तेमनुं नाम महोदयसागरज्ञ रमायु. (२) रत्नभमां ५. सु. वीरपुर आनंदसामरज्ञ भासे नियामंजना रतीश भाई लीराचंडे तरनने वैशाख सु. ६ ५. सु. चंद्रसंगल्ला शिष्य तरीके दीक्षा लीधी. तेमनुं नाम महेन्द्र-सागरज्ञ रमायु.

आचार्या-पाण्डोरमां वैशाख सु १० ५. भ. यती-द्विजयज्ञने आचार्यापह अपायु.

काणधर्मी-५ सु. भिनवेजयज्ञ नमनभरमां चैत्र वह ७ काणधर्मी भास्या.

भात शुद्धर्ता-(१) ५. वीताण्णमां ता. १२-५-३८ अमदावाहना शेठ घनाभाई हमाला. ना-हाये श्री वधंमान जेन आगम भासिरनुं तथ: (२) प्रभासपाठ्यना शेठ सुंदरज्ञ हरभयंहना हाये श्री जेन आगम साडित्य भासिरनुं भात शुद्धर्ता थयु.

खीडिघोग मंहिर-पाठ्यनमां ता. १२-५-३८ ना हिवसे नमनभरना शेठ घोपत्वाल धारशीभाइना हाये श्री दीनांगीभाई घोगमंहिरनुं हृष्पाटन थयु.

आक्कीकामां उपाश्रय-मेंआसामां ता. १२-५-३८ ना हिवसे डो. अमृतवाल शेठ ॥
हाये लगभग एक ल अ. शिविंगना भर्तै तैयार होतेल उपाश्रयनुं हृष्पाटन थयु.

रजन-आवानाइ राज्ये भद्रारौ ज्यांतीनी रजन मंजुर हरी छे.

सभावत-शेठ घोपत्वाल धारशीभाईओ राजकोटमां जेन शेनाटीरीयम, पांजरापेण वगेरे जुदा जुदा भातामां ११०३ ना सभावत हरी छे.

**इरी अंधारो-डां, रोलीतुं जे जेन मंहिर केटवाक वर्षी पडेलां तेगी खडवामां आन्यु
हतु ते त्यांना जेसाईज्ञ तरक्की अंधारी आपनाना सम.चार मल्या छे.**

**पुनर्जन्मने पुरातो-धनपुरमां हेवप्रसाद नामना एऽ गुह्यस्थनो पांच वर्षनो पुत्र
पेताना पूर्जन्मनी होतो। छहे छे.**

Regd. No. B. 3801

विशेषांक

“ श्री जैन सत्य प्रकाश ”

ने।

भीजे विशेषांक

[श्री पर्युषणा पर्व विशेषांक]

चाथा वर्धना मारंबमां प्रसिद्ध थरो.

[ए विशेषांकनी सर्वस्तर चालना आंदर वाचा]

ए दणदार आंके भेणववा

आजे ८ ग्राहक भनो।

भगवान् महावीरस्त्रामीना ज्वनने लगता अनेक विद्वता
भर्या लेखाथी भरपूर सरस पानानो दणदार आंके

श्री महावीर निर्वाण विशेषांक

सूक्ष्य-टपाल अर्थ साथे तेर आना.

श्री महावीर निर्वाण विशेषांक साथेनी

श्री जैन सत्य प्रकाशनी

भीज वर्धनी

पाढ़ी झाठल अढ़ी इधिया, धुटा अंडे बे इधिया.

लगोः— श्री जैनधर्म सत्यप्रकाशक समिति
वेशंगभाइनो वाडी, धीकांडा,
अमहावाद. (ગुજરात)

2147 भाष्यनार सुभाष घिन्टरी, सलापेसु, होस ३१३, अमहावाद.